अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा का मुख पत्र

₹5

श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका

सामाजिक चेतना एवं जागरुकता के लिये सजग मासिक पत्रिका

(पल्लीवाल, जैसवाल, सैलवाल सम्बन्धित जैन समाज)

अंक 5 ✦ प्रकाशन तिथि : 25 नवम्बर 2023 ✦ वर्ष 12 ✦ कुल पृष्ठ 48 ✦ मूल्य ₹5

TAILOR MADE
SOLUTIONS
FOR DIVERSE
INDUSTRY NEEDS

MEI POWER PRIVATE LIMITED

MARSON'S
AGRA, INDIA

25 KVA to 14 MVA
Type Tested as per
BIS Level 3 & 2 / IEC & IS

संस्थापक - स्व. श्री स्वरूप चन्द जी जैन (मारसन्स)

(19 अगस्त, 1927 - 31 अगस्त, 2016)

आपका स्नेह, सेवाभाव, समाज की प्रगति की भावना, उच्च विचार एवं
प्रेरणादायक जीवन सदैव हमारा मार्गदर्शन करता रहेगा।

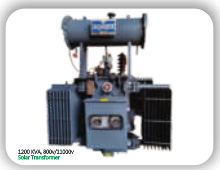

Transformers | EPC Contractor | Renewable Energy Solutions

MEI POWER PRIVATE LIMITED
Correspondence: 1/189 Delhi Gate, Civil Lines, **Agra - 282 002 (INDIA)**
Ph: +91 562 2520027, +91 562 2850812
Works: Mathura Road, Artoni, **Agra - 282 007 (INDIA)**
Ph: +91 90277 09944, +91 92580 78803
info@marsonselectricals.com www.marsonselectricals.com

ISO 9001 CERTIFICATION 9001 · ISO 14001 CERTIFICATION 14001 · MIDEL · CE · ENERGY IS LIFE BEE CONSERVE IT · EU Directives

Transformers | EPC Contractor | Renewable Energy Solutions

सामाजिक चेतना एवं जागरुकता के लिये सजग

श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका

अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा का मुख पत्र

(पल्लीवाल, जैसवाल, सैलवाल सम्बन्धित जैन समाज)

मूल्य ₹ 5/-

अंक 5 ✦ 25 नवम्बर 2023 ✦ वर्ष 12 Email : shripalliwaljain.patrika@gmail.com *कुल पृष्ठ : 48*

पूर्व प्रकाशन मथुरा से, सम्प्रति जयपुर से प्रकाशित

महासभा पदाधिकारी

श्री त्रिलोक चन्द जैन *(अध्यक्ष)*
नया बास, सकर कूंई के पीछे, अलवर (राज.)
मोबा.: 8233082920

श्री महेश जैन *(महामंत्री)*
टी-22, अलंकार प्जाला, सेन्ट्रल स्पाइन, सेक्टर 2,
विद्याधर नगर, जयपुर-302039 (राज.)
मोबा.: 9414074476
Email : abpjmmaheshjain@gmail.com

श्री भागचन्द जैन *(अर्थमंत्री)*
पुराने जैन मंदिर के पास, नौगावां,
जिला अलवर-301025 (राज.)
मोबा.: 9828910628
E-mail : bhagchandjain07@gmail.com

पत्रिका प्रबन्ध एवं सम्पादक मण्डल

डॉ. अनुपम जैन *(परामर्शदाता)*
'ज्ञानछाया', डी-14, सुदामानगर, इन्दौर-452009
फोन : 0731-2797790, मोबा.: 9425053822
E-mail : anupamjain3@rediffmail.com

श्री चन्द्रशेखर जैन *(संयोजक)*
86, मगन विला, श्री विहार कॉलोनी, होटल क्लार्क
आमेर के पीछे, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर-302018
फोन : 0141-2553272, मोबा.: 9829134926
E-mail : csjain30@yahoo.co.in

श्री प्रकाश चन्द जैन *(सम्पादक)*
78, बैंक कॉलोनी, महेश नगर विस्तार "बी"
गोपालपुरा बाईपास, जयपुर-302015
मोबा.: 9828374013
E-mail : pcjain49@gmail.com

श्री पारस जैन गहनौली *(सह-सम्पादक)*
बी-204बी, 10-बी स्कीम, गोपालपुरा बाईपास,
जयपुर-302018, मोबा.: 9928715869

श्री महेश चन्द जैन *(अर्थ संयोजक)*
36-सी, कृष्णा विहार विस्तार, गोपालपुरा बाईपास,
जयपुर-302015, मोबा.: 9828288830
E-mail : 3466mahesh@gmail.com

संयोजक की कलम से.....

सामाजिक बदलाव

आज के आधुनिक युग में नई पीढ़ी को न पुराने ख्याल पसंद आते हैं और न ही परिवार के बुजुर्गों की सलाह। यदि यह कहा जाए कि बुजुर्गों की अनदेखी की जाती है तो कोई गलती नहीं होगी। समाज के रीति रिवाज में कुछ कमियां थी और कुछ अच्छाइयां। समय के अनुसार इनमें सुधार किए जाने की आवश्यकता महसूस की जा रही है। परंतु देखा यह गया है कि रीति रिवाज में सुधार के स्थान पर दिखावा ज्यादा बढ़ने लग गया है। वर्तमान में विवाह शादियों की रीति रिवाज को ही अगर हम देखें तो ऐसा प्रतीत होता है की चारों ओर फिजूलखर्ची में अन्य विकृतियां बढ़ गई हैं। हम सभी समाज बंधुओ के साथ-साथ महासभा को भी इस विषय पर विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए। शादी विवाह में ज्यादातर प्रोग्राम 1-2 दिन का होता था, लेकिन अब यही प्रोग्राम साप्ताहिक प्रोग्राम तक में परिवर्तित हो गया है। एक दिन सगाई का प्रोग्राम, एक दिन महिला संगीत का आयोजन, एक दिन हल्दी का आयोजन, लगन टीका, गणेश आमंत्रण के साथ-साथ विवाह कार्यक्रम का मुख्य आयोजन जो किसी शाही कार्यक्रम से कम नहीं होता है। इन आयोजनों पर व्यक्ति अपार धन व्यय कर रहा है। समय के अनुसार इनमें परिवर्तन आवश्यक है। वर्तमान पीढ़ी में आय के बढ़ते स्रोत एवं सीमित परिवारों के कारण अनाप-शनाप व्यय वैवाहिक कार्यक्रमों पर किया जा रहा है, जिस पर अंकुश लगाना अति आवश्यक है। संपन्न आदमी तो यह कार्य बड़े ही चाव से कर लेता है लेकिन दूसरी ओर सामान्य आदमी जब इन रीति रिवाज की ओर देखता है तो वह अपने आप को लाचार सा पाता है। अत: वैवाहिक कार्यक्रमों के आयोजन पर निश्चित रूप से चर्चा की जानी चाहिए और कुछ ठोस निर्णय महासभा के स्तर पर लिए जाने चाहिए।

वर्तमान में अगर हम पल्लीवाल जैन पत्रिका के वैवाहिक कॉलम पर नजर डालें तो पाएंगे कि लड़कियों के विज्ञापन बहुत कम है जबकि

शेष अगले पृष्ठ पर...

पत्रिका में प्रकाशित लेख एवं विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। यह लेखकों के निजी विचार माने जाने चाहिये। प्राप्त लेखों में संशोधन कर प्रकाशन करने का अधिकार सम्पादक मंडल के पास सुरक्षित है।

....संयोजक की कलम से

लड़कों के वैवाहिक विज्ञापन काफी अच्छी संख्या में प्रकाशित किए जाते हैं। इसका कारण समाज की प्रबुद्ध वर्ग एवं पढ़ी-लिखी लड़कियां जो अच्छे रोजगार पर कार्य कर रही हैं उनका समाज के प्रति जुड़ाव भी नहीं है और उनका संबंध खंडेलवाल, अग्रवाल या वैश्य समाज के साथ-साथ पंजाबियों व इतर समाज में भी हो रहा है। हमें सभी को मिलजुल कर सोच विचार कर इन संबंधों पर ध्यान देना चाहिए। देखने में यह भी आया है कि मां-बाप एवं सगे-संबंधियों का परिवार की लड़कियों के विवाह के मामले में ज्यादा दखल नहीं होता है और लड़कियां स्वयं ही अपने जीवनसाथी का चयन करने के लिए स्वतंत्र होती हैं, इसमें शिक्षा एवं रोजगार का बहुत बड़ा योगदान है। अत: समाज के सभी वर्गों को मिलजुल कर इन सामाजिक अच्छाइयां एवं बुराइयों पर गहन मंथन करना चाहिए और युवा वर्ग को इन कार्यों पर अंकुश लगाने की प्रेरणा दी जानी चाहिए। इस हेतु युवक का 25-26 वर्ष एवं युवतियों का 22-23 वर्ष की उम्र में ही वैवाहिक सम्बन्ध करने का प्रयास चाहिए।

महासभा एवं महासभा के युवक मंडल, महिला मंडल इन कार्यों में अपनी रचनात्मक भूमिका निभाकर समाज को एक नई दिशा दे सकते हैं।

-चन्द्रशेखर जैन

सूचना

अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा की कार्यकारिणी की आगामी मिटिंग रविवार, 10 दिसम्बर 2023 को विशाल धर्मशाला, सोनागिर जी, जिला दतिया (म.प्र.) में होगी।

-महेश जैन

महामंत्री, अ.भा.प. जैन महासभा

विफलता से सीखें और आगे बढ़े....

हम सब चाहते हैं कि हमें जीवन के हर संघर्ष में सफलता हासिल हो। हम जो भी सपना देखे वह तुरन्त ही पूरा हो जाये। हमारे पास दुनिया को अपने कदमों में झुकाने की ताकत हो। बेशुमार दौलत और ऊँची सामाजिक हैसितय हो। सत्य तो यह है कि हमारी भूख इससे भी ज्यादा है।

हम चाहते हैं कि हम जीवन के किसी भी युद्ध में पराजित न हों और हमें चुनौती देने वाला हर एक व्यक्ति हमसे हार जाऐ।

आज के माँ-बाप अपने सपनों का बोझ बच्चों पर डाल देते हैं और वो बच्चों को बचपन में ही अव्वल स्थान पर पहुंचने और बने रहने का संस्कार देते हैं। किसी कक्षा में जब बच्चा प्रथम स्थान प्राप्त करके गर्वोन्मांद में डूबा होता है, ठीक उसी समय बाकी बच्चे पराजय बोध से तिलमिला रहे होते हैं। इस पर भी गंभीरता से विचार करना जरूरी है।

विद्यार्थी जीवन की उम्र एक नाजुक उम्र होती है। इसे समझना भी बेहद जरूरी है कि इंसान को लगने वाली ठोकरों से व्यक्ति में धैर्य और जुझारूपन जैसे चारित्रिक गुणों का विकास होता है। लेकिन आज के बच्चे इतने नाजुक हैं कि वो छोटी सी असफलता के कारण डिप्रेशन में आने लगते हैं और अपना काफी नुकसान कर लेते हैं। ऐसी मानसिक स्थिति से निकलने के लिए अपनी कमियों को दुरूस्त कर अपनी तैयारी दुगनी ताकत से करें। ऐसे उदाहरण दुनिया में भरे पड़े हैं। थॉमस एडीसन लगभग एक हजार विफल प्रयोग करने के बाद बल्ब का आविष्कार कर पाये थे। आइंस्टाइन को तो मंदबुद्धि बालक बताकर स्कूल से निकाल दिया गया था। इनकी ताकत यही थी कि विफलता के क्रूर हाथों में इन महापुरुषों ने अपना आत्मविश्वास बनाए रखा। और कल्पना कीजिए कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का अगले दिन राज्याभिषेक की तैयारियां चल रही थी, पूरा अयोध्या रोशन से जगमगाया हुआ था, पूरी प्रजा उस सुबह का इंतजार में जगी हुई थी। लेकिन समय ने पलटा मारा और रात को ही महाराजा दशरथ ने राम को बुलाकर यह निर्णय सुनाया कि सुबह आपका राज्याभिषेक नहीं होगा, आपको वन जाना पड़ेगा। सोचकर देखिए इस निर्णय से श्रीराम को कितनी पीड़ा हुई होगी, लेकिन अपनी पीड़ा से ज्यादा अपने पिता के निर्णय को मानना जरूरी था और हंसते-हंसते वन जाने की तैयारी करने लगे। अगर उस समय उन्होंने इस निर्णय का विरोध कर दिया होता तो वो मर्यादा पुरुषोत्तम राम नहीं कहलाते। ये ही उन्हें महान बनाती है।

इतने उदाहरण देने का मतलब यही है कि विद्यार्थी जीवन में छोटी-मोटी पराजय से घबराने के बजाए धैर्य से काम लेना चाहिए और पराजय से सीखकर आगे बढ़ना चाहिए, निश्चित ही सफलता एक दिन आपके कदम चूमेंगी। जिंदगी में हार जीत के खेल में खेल भावना से खेलते हुए जीने की कोशिश करनी चाहिए।

-पारस जैन 'गहनौली'

सहसंपादक, श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका

सामायिक लेख

महावीराचार्य : एक महान गणितज्ञ

भगवान महावीर के निर्वाण की स्मृति स्वरूप हम सब दीपावली मनाते हैं। यह पर्व भारत के लगभग सभी धर्मावलम्बी अपने अपने कारणों से मनाते हैं किन्तु जैनों में तो यह पर्व 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर के निर्वाण के कारण परम पावन है। मैं आज आपका परिचय एक महान दिगम्बर जैनाचार्य महावीर से करा रहा हूँ। जिन्हें हम महावीराचार्य के नाम से जानते है।

7-10 वीं शताब्दी में भारत के एक भूभाग में राष्ट्रकूट वंश ने शासन किया। इसी राजवंश के अन्तर्गत 814-877 ई. के मध्य अमोघवर्ष नृपतुंग ने शासन किया। कर्नाटक-तमिलनाडु प्रान्त में महावीराचार्य का जन्म इसी काल में हुआ। आप आचार्य वीरसेन, आचार्य जिनसेन आदि जैनाचार्यों की परम्परा में दीक्षित थे। आपके माता-पिता, जन्मस्थान आदि के बारे में कुछ अधिक ज्ञात नहीं है।

भारतीय गणित का स्वर्णयुग 500-1200 ई. माना जाता है। इस युग में निम्नांकित प्रमुख गणितज्ञ हुए :-

1. आर्यभट (जन्म 476 ई.)
2. ब्रह्मगुप्त (628 ई.)
3. आचार्य श्रीधर (799 ई.)
4. आचार्य महावीर (850 ई.)
5. भास्कराचार्य (1150 ई.)

अन्य भी अनेक गणितज्ञ यथा भास्कर-I, वराहमिहिर, आर्यभट-II, श्रीपति, राजादित्य, सिंहतिलकसूरि आदि की भी चर्चा होती है किन्तु विश्व गणित इतिहास की पुस्तकों में उक्त 5 का ही प्रमुखता से वर्णन होता है।

महावीराचार्य की एकमात्र उपलब्ध पुस्तक **गणित-सार-संग्रह** है। पाठ्यपुस्तक शैली में लिखी इस पुस्तक का सदियों तक भारत में गणितीय शिक्षण के लिए उपयोग होता रहा। गणितसार संग्रह का अंग्रेजी अनुवाद सहित सम्पादन सर्वप्रथम एम. रंगाचार्य ने किया जिसे मद्रास सरकार द्वारा 1912 में प्रकाशित किया गया। 1963 में प्रो. लक्ष्मीचन्द्र जैन द्वारा किये गये हिन्दी अनुवाद सहित जैन संस्कृति संरक्षक संघ, सोलापुर से प्रकाशन किया गया। 2000 में प्रो. पद्मावथम्मा ने इसका कन्नड़ अनुवाद होम्बुज जैन मठ, हुमचा (कर्नाटक) से प्रकाशित कराया जिसमें अंग्रेजी अनुवाद भी पुनर्मुद्रित हुआ। पश्चात 2003 में तेलुगू एकेडेमी ने तेलुगू अनुवाद भी प्रकाशित किया। ये सभी अंग्रेजी, हिन्दी, कन्नड़ एवं तेलुगू मूलतः अंग्रेजी अनुवाद एवं रंगाचार्य के सम्पादन पर ही आधारित हैं। अब उपलब्ध अतिरिक्त पाण्डुलिपियों एवं टीकाओं के आधार पर नवीन संशोधित संस्करण की चर्चा चल रही है फलतः अगले 4-5 वर्षों में एक नये परिष्कृत संस्करण की आशा जगी है। जैन परम्परा से अनभिज्ञ रंगाचार्य ने भारतीय गणित विशेषतः जैन गणित की महती सेवा की है किन्तु जैन पृष्ठभूमि के अभाव के कारण वे कुछ अर्थ समीचीन रूप से न पकड़ सके। तथापि उनका कृतित्व श्लाधनीय है।

कतिपय विद्वान षट्त्रिंशिका (षट्त्रिंशतिका या छत्तीसी टीका), क्षेत्रगणित, ज्योतिष पटल, छत्तीसी पूर्वा उत्तर प्रतिसह आदि की रचना का श्रेय भी महावीराचार्य को देते हैं किन्तु इनमें से कोई भी उनकी कृति नहीं है। मैंने इसकी विस्तारपूर्वक चर्चा अपनी कृति महावीराचार्चः एक समीक्षात्मक अध्ययन में की है।

अब हम आपके गणितीय योगदानों की चर्चा करेंगे।

1. दाशमिक स्थानमान क्रम की समकालीन साहित्य में सबसे लम्बी 24 पदों की सूची गणितसार संग्रह में ही मिलती है। इससे पूर्व आर्यभट ने 12 पदों एवं श्रीधर ने 18 पदों की सूची दी है (ग.सा.सं.-1/63-68)। 40 पदों की सूची देने वाले राजादित्य (1190 ई.) भी जैन थे।

क्र./पद संख्या	*आर्यभट (476 ई.)*	*श्रीधर (750 ई.)*	*महावीर (850 ई.)*
1.	एक	एक	एक
2.	दश	दश	दश
3.	शत	शत	शत
4.	सहस्त्र	सहस्त्र	सहस्त्र
5.	अयुत	अयुत	दस सहस्त्र
6.	नियुत	लक्ष	लक्ष
7.	प्रयुत	प्रयुत	दस लक्ष
8.	कोटि	कोटि	कोटि
9.	अर्बुद	अर्बुद	दस कोटि
10.	वर्ण	अब्ज	शत कोटि
11.		खर्व	अर्बुद
12.		निखर्व	न्यर्बुद
13.		महासरोज	खर्व
14.		शंख (शंकु)	महाखर्व
15.		सरितांपति	पद्म
16.		अन्त्य	महापद्म
17.		मध्य	क्षोणी
18.		परार्ध	महाक्षोणी

19.	शंख
20.	महाशंख
21.	क्षित्या (क्षिति)
22.	महाक्षित्या (महाक्षिति)
23.	क्षोभ
24.	महाक्षोभ

2. वर्ग करने की अन्य विधियों के साथ आपने एक ऐसी विधि दी है जो दो संख्याओं के योग के वर्ग करने की आधुनिक रीति के समकक्ष है।

$$(A + B)^2 = A^2 + 2.A.B. + B^2$$

(ग.सा.सं., 2/31, पृ. 14)

3. शून्य के किसी संख्या को भाग देने के संदर्भ में आचार्य महावीर का नियम असत्य प्रतीत होता है। आपने लिखा है कि यदि किसी संख्या को शून्य से विभाजित कर दिया जाये, उसमें शून्य जोड़ या घटा दिया जाये तो संख्या अपरिवर्तित रहती है। (ग.सा.सं., 1/49, पृ. 6) अर्थात्

$$A \div 0 = A + 0 = A - 0 = A$$

यहाँ $\frac{A}{0} = A$ असत्य प्रतीत होता है। किन्तु यदि हम यहाँ किंचित भिन्न पृष्ठभूमि पर विचार करें तो यह स्पष्ट होता है कि वितरण के नियमानुसार यदि n वस्तुओं में से असत वितरित करें अर्थात् 20 वस्तुओं को शून्य लोगों में बांटे तो संख्या अपरिवर्तित रहती है। आधुनिक गणित में $\frac{A}{0} = \propto$ (अनंत) होता है। किन्तु क्या प्राचीन जैन गणित में अनंत का यही स्वरूप है? यदि नहीं तो महावीराचार्य द्वारा $\frac{A}{0} =$ अनंत लिखना क्या उपयुक्त होता? ऐसा प्रतीत होता है कि न्याय की दृष्टि से महावीराचार्य ने n वस्तुओं को शून्य में वितरित किये जाने पर वस्तु अपरिवर्तित रहना लिखा होगा। महावीराचार्य उस परम्परा में दीक्षित थे जिसमें न्याय ग्रंथों का पठन-पाठन खूब होता रहा है, अतः नैयायिक के दृष्टिकोण की उपेक्षा उचित नहीं। पद्मावथम्मा लिखती हैं-

The concept of proper infinities in Mathematics was to come with George Cantor in the sixties of Nineteenth Century, Mahāvīrācārya obliviously thinks that a division by zero is not division at all. (GSS, Hombuj Edition, P…..)

4. ऋणात्मक संख्याओं का वर्गमूल ज्ञात करने के सन्दर्भ में महावीराचार्य ने अवैज्ञानिक रूप में न बढ़ते हुए उस काल तक उपलब्ध सामग्री के अन्तर्गत अत्यंत प्रतिभापूर्ण निष्कर्ष निकाला है। आपने लिखा है कि-

'घनं घनर्णयो मूले स्वर्णे तयो क्रमात।
ऋण स्वरूपतोऽवर्गो यतस्तरभद्वन्न तत्पदम्॥'

(ग.सा.सं. 1/52, पृ. 7)

अर्थात् धनात्मक एवं ऋणात्मक राशि का वर्ग धनात्मक होता है और उस वर्ग राशि के वर्गमूल क्रमशः धनात्मक एवं ऋणात्मक होते हैं। चूंकि वस्तुओं के स्वभाव में ऋणात्मक राशि वर्गराशि नहीं होती है, इसलिए उनका कोई वर्गमूल नहीं होता है।

आधुनिक गणित के अनुसार भी ऋणात्मक राशियों का वर्गमूल वास्तविक राशि नहीं होती है। वस्तुतः उनके उपरोक्त प्रतिभायुक्त कथन ने काल्पनिक संख्याओं के आविष्कार का पथ प्रशस्त किया है। महावीराचार्य ने एतदर्थ आवश्यक सूक्ष्म दृष्टि संभवतः धवलादि प्राचीन जैन ग्रंथों में सहजता से उपलब्ध असंगति प्रदर्शन विधि (Method of Reduction Absurdam) से विकसित की होगी।

ऐतिहासिक दृष्टि से उल्लेखनीय है कि जो परिकल्पना महावीराचार्य ने 850 ई. के लगभग की वही Cauchy ने योरोप में 1847 ई. में की थी। E.T. Bell ने इस परिकल्पना हेतु महावीराचार्य की मुक्त कंठ से प्रशंसा भी की है एवं काल्पनीक संख्याओं के आविष्कार का श्रेय महावीराचार्य को दिया है। वे लिखते हैं कि -

The first clear recognition about the imaginary numbers was made by Mahāvīrācārya by saying negative numbers have no square root in nature. *[E.T. Bell, Development of Mathematics, P. 175]*

5. भिन्नों के प्रकरण में महावीराचार्य ने असमान हरों वाली भिन्नों को जोड़ने हेतु निरुद्ध (लघुत्तम समापवर्त्य) ज्ञात करने का नियम दिया है।

'छेदापर्वतकानाम् लब्धानां चाहतौ निरुद्धः स्यात्।
हरहत निरूद्ध गुणिते हारांशगुणे समोहारः॥'

(ग.सा.सं. 3/56, पृ. 49)

अर्थात् हरों के सभी गुणनखंडों और उनके सभी अंतिम भजनफलों के सन्तत गुणन से निरुद्ध (लघुत्तम समापवर्त्य) प्राप्त होता है। निरुद्ध को हरों द्वारा भाजित करने से प्राप्त भजनफलों में हरों और अंशों का गुणन करते हैं। इस प्रकार से प्राप्त हरों और अंशों संबंधी अपवर्त्यों के हर समान होते हैं।

उल्लेखनीय है कि योरोप में 15वीं श. में लघुत्तम समापवर्त्य निकालने संबंधी नियम का आविष्कार हुआ तथा 17वीं श. में इसका व्यापक प्रयोग प्रारम्भ हुआ। जबकि महावीराचार्य ने इसका प्रयोग 9वीं शताब्दीं में ही कर दिया था। श्रीधर ने 750 ईसवी में समच्छेदीकरण के नाम से इसी नियम का प्रयोग किया है।

6. किसी भी पूर्णांक अथवा भिन्न को 1 अंश वाली भिन्नों के पदों में व्यक्त करने संबंधी अनेक नियम महावीराचार्य के साहित्य में उपलब्ध हैं। ऐसा भिन्नों को एकांशक भिन्न/रूपांशक भिन्न (Unit Fraction) की संज्ञा दी जाती है। इनके अध्ययन को अपने

अध्ययन की परिधि में लेने वाले आप प्रथम भारतीय गणितज्ञ थे। आपके पश्चात भास्कर II (1150 ई.) ने भी इसका विवेचन नहीं किया, मात्र नारायण पंडित (13वीं श.ई.) ने इसका व्यापक विवेचन किया है।

7. क्रमचय एवं संचय पर प्रश्नों के विवेचन की श्रृंखला में पूर्ववर्ती जैनाचार्यों जिन्होंने $n_{C_1}, n_{C_2}, n_{C_3}$ .... आदि से एक कदम आगे बढ़कर व्यापक सूत्र की प्रतिस्थापना की है। आपके अनुसार-प्रस्तार योगभेदस्य सूत्र-

एकाद्येकोत्तरतः पदमूर्ध्वा र्घयतः क्रमोत्क्रमशः।
स्थाप्य प्रतिलोमध्नं भाजितं सारं॥

(6/218, पृ. 146)

$$n_{C_r} = \frac{n(n-1)(n-2)\ldots\ldots\ldots\ldots\ldots.(n-r+1)}{1.2.3\ldots\ldots\ldots\ldots\ldots\ldots\ldots\ldots\ldots\ldots r}$$

बीजीय रूप से-

$$n_{C_r} = \frac{n!}{r!\,(n-r)!}$$

ऐतिहासिक अभिरुचि का विषय यह है कि आचार्य श्रीधर ने अपनी पाटीगणित में यही नियम दिया है। यह नियम योरोप में Herigon (1634 ई.) द्वारा पुनः अविष्कृत हुआ। (Smith, History, Vol. II/527)

8. गणितसार संग्रह का क्षेत्रगणित व्यवहार अनेक विशिष्टताओं से परिपूर्ण है। इसमें विविध प्रकार के त्रिभुजों, चतुर्भुजों, वृत्त आदि के क्षेत्रफल ज्ञात करने के साथ ही दीर्घवृत्त, यवाकार, मुरजाकार, पणवाकार, वज्राकार एक निषेध क्षेत्र, उभय निषेध क्षेत्र, तीन एवं चार सस्पर्शी वृत्तों से आबद्ध क्षेत्र, हस्तदंत क्षेत्र का क्षेत्रफल निकालने के नियम भारतीय गणित में सर्वप्रथम प्रतिपादित किये हैं।

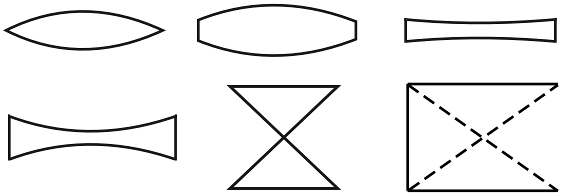

शुद्ध रूप से गणितज्ञों की श्रृंखला में सर्वप्रथम महावीराचार्य ने ही शंख की आकृति का क्षेत्रफल ज्ञात करने का सूत्र दिया है। बाद में नारायण पंडित ने भी इसे ज्ञात करने का सूत्र दिया। यह सत्य है कि वीरसेन (816 ई.) ने धवलाटीका तथा नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती (981 ई.) ने त्रिलोकसार में भी ये नियम दिये हैं। दीर्घवृत्त के अतिरिक्त अन्य आकृतियों की तो चर्चा भी सर्वप्रथम आपने ही की। मात्र वृत्त ही नहीं अपितु गोलीय खंडों (नतोदर + उन्नतोदर) के आयतन ज्ञात करने के सूत्र भी उपलब्ध हैं। चतुर्भुज का क्षेत्रफल निकालने का सूत्र भी गणितसार संग्रह में दिया है।

9. जैनाचार्यों की सुदीर्घ परम्परा के अनुरूप आपने भी $\pi = \sqrt{10}$ अथवा स्थूल रूप से 3 स्वीकार किया है।

वृत्तक्षेत्रव्यासो दशपदगुणितो भवेत्परिक्षेपः।
व्यासचतुर्भागगुणः परिधिः फलमर्धमर्धे तत्॥ 7/60

अर्थात् वृत्त का व्यास 10 के वर्गमूल से गुणित होकर परिधि को उत्पन्न करता है। परिधि को एक चौथाई व्यास से गुणित करने पर क्षेत्रफल प्राप्त होता है। अर्द्धवृत्त के सम्बन्ध में यह इसका आधा होता है।

10. स्वेच्छापूर्वक चयनित समुचित बीज संख्याओं द्वारा जनित आकृतियों (त्रिभुजों, आयतों) के निर्धारण में आपने कुशलतापूर्वक बीजगणितीय समीकरणों का प्रयोग किया है। एक निश्चित लम्ब (एक भुजा), निश्चित आधार (द्वितीय भुजा), एवं निश्चित कर्ण (विकर्ण) वाले समकोण त्रिभुजों (आयतों) के निर्धारण, निश्चित परिमित, निश्चित क्षेत्रफल, परस्पर क्षेत्रफलों/परामितियों में विशिष्ट अनुपात रखने वाले आयतों के निर्धारण में आपने कुशलतापूर्वक बीजगणितीय समीकरणों का प्रयोग किया है। बीजगणित के माध्यम से ही आपने बीजराशियों से प्रारम्भ कर अथवा एक निश्चित माप की एक भुजा वाले समद्विबाहु, समबाहु, विषम बाहु एवं समकोण त्रिभुज बनाने के नियम दिये हैं।

निश्चित विकर्ण 'C' वाले विविध आयतों अथवा निश्चित कर्ण C वाले विविध समकोण त्रिभुजों को प्राप्त करने का आपने निम्नलिखित नियम दिया है। यदि कर्ण/विकर्ण की माप C हो तो शेष दो लम्बवत् भुजायें/लम्ब एवं आधार निम्नलिखित सूत्र से ज्ञात किये जा सकते हैं। (ग.सा.सं. $7/90\frac{1}{2}$) यदि बीज संख्यायें m, n है तो

$$\text{कर्ण} = c,\ \text{लम्ब} = \frac{m^2-n^2}{m^2+n^2}.c,\ \text{आधार} = \frac{2\,mn}{m^2+n^2}.c$$

इसके उपरान्त 65 कर्ण वाले त्रिभुजों की शेष 2 भुजाओं के समूह (39, 52), (25, 60), (33, 56), (16, 63) दिये गये है।

महान जैनाचार्य-महावीराचार्य के इतने अवदानों के बावजूद उन्हें आर्यभट एवं भास्कराचार्य के समान प्रसिद्धि नहीं मिली। आर्यभट के नाम पर भारत ने अपना प्रथम उपग्रह प्रक्षेपित किया गया था। भास्कराचार्य की लीलावती को कौन नहीं जानता?

महावीराचार्य की प्रसिद्धि को दिग्दिगन्त व्यापी बनाने हेतु

शेष पृष्ठ 10 पर.....

हिन्दुत्व की हवा में कहीं जैनत्व न खो जाय

****

पिछले कुछ वर्षों से हिन्दुत्व की हवा इतनी तेजी से बह रही है कि उसने सभी को अपनी चपेट में ले लिया है। इसका सबसे अधिक प्रभाव जैनत्व पर पड़ा है। यह असर इतना गहरा हुआ कि सामान्य जैन बन्धु ही नहीं बल्कि जैन सन्त भी इसकी चपेट में आ गए हैं और जाने या अनजाने में वे भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हिन्दुत्व के गुणगान में लग गए हैं, बिना यह समझे कि इससे जैनत्व को कितना नुकसान हो रहा है। ऐसी स्थिति में आशंकित होना स्वाभाविक है कि कहीं जैनत्व के अस्तित्व को तो खतरा नहीं हैं।

हिन्दुत्व की अलग-अलग मौके पर अलग-अलग तरीके से व्याख्या की जाती रही है। जिस समय जिस व्याख्या से राजनैतिक लाभ हो वैसी ही व्याख्या कर दी जाती है। हिन्दुत्व को एक बार हिन्दू संस्कृति से जोड़ा जाता है तो अगली बार गाय, गंगा और गीता से जोड़ा जाता है। कभी वैदिक गणित और संस्कृत से जोड़ा जाता है तो कभी गैर-भारतीय धर्मों को हिन्दुत्व के लिए खतरा बताकर भावात्मक तरीके से उकसाया जाता है।

हम जैन अहिंसा के पुजारी हैं, अतः जहाँ भी जीव दया की बात आती है तो हम भावात्मक तरीके से उस ओर आकर्षित हो जाते हैं और जो इस मुद्दे को उठाता है, हम उसके प्रशंसक हो जाते हैं। हम यह सोच भी नहीं पाते कि जो कुछ कहा जा रहा है उसके पीछे सत्यता क्या है, उसके प्रति गम्भीरता है भी या नहीं। या फिर मात्र भावात्मक तरीके से ब्लैकमेल तो नहीं किया जा रहा है। जैनों को सबसे अधिक जो बात लुभाती है वह है गौ-रक्षा की। लेकिन इसकी वास्तविकता को समझना होगा।

जैनत्व को कैसे परिभाषित किया जाय, यह एक प्रश्न हो सकता है। मैं समझता हूँ कि जैन सिद्धांतों, जैन तीर्थों और संस्थाओं का बिना किसी हस्तक्षेप के संरक्षण व संवर्धन जैनत्व में निहित हैं। लेकिन हिन्दुत्व की तेज हवा में हमारे सैद्धांतिक विश्वास कमजोर पड़ने लगे हैं, हमारे जैन तीर्थों व संस्थाओं को नुकसान पहुँचाया जा रहा है। हिन्दुत्व और जैनत्व में अन्तर स्पष्ट है, उसे भी समझना होगा। हिन्दुत्ववादी कहते हैं कि मात्र गौ माता की रक्षा करो जबकि जैनधर्म कहता है कि अकेले गाय की नहीं बल्कि सभी जीवों की (जिसमें बैल, सांड, आदि तथा सभी छोटे जीव भी सम्मलित हैं) रक्षा करो। हिन्दुत्ववादी कहते हैं कि मात्र गंगा बचाओ, जैन कहते हैं कि जल भी जीव है अतः मात्र गंगा को ही नहीं बल्कि सभी नदियों की रक्षा करो। हिन्दुत्ववादी कहते हैं कि गीता सर्वोपरि धार्मिक ग्रंथ है, जैन कहते हैं कि जैनागम, देव व गुरु का श्रद्धान ही सम्यक् दर्शन है। जैन कहते हैं कि हमारे तीर्थ स्थानों व संस्थाओं में हस्तक्षेप न हो, हिन्दुत्ववादी कहते हैं कि जैन भी हिन्दू धर्म का हिस्सा है, अतः हिन्दुओं का हस्तक्षेप सही है।

कोई कह सकता है कि चलो आज गायों की रक्षा की बात कही जा रही है, कल को सब जीवों की रक्षा की बात भी कही जायेगी। अतः हमको गौ-रक्षा का समर्थन करना चाहिए। बस इसी बात पर जैन लोग पिघल जाते हैं बिना यह समझे कि वास्तविकता वह नहीं है जो कहा जा रहा है। हमें मात्र भावात्मक तरीके से अपनी ओर आकर्षित किया जा रहा है। वास्तविकता यह है कि राजनेता गौ-रक्षा को लेकर भी तहे-दिल से बिल्कुल भी गम्भीर नहीं हैं। यदि वे गम्भीर होते तो अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग बयान क्यों देते। जहाँ अहिंसक जैन अधिक हैं वहाँ उन्हें अपने खेमें में लेने के लिए गौ-रक्षा की बात कह दी जाती है। दूसरे दिन अन्य राज्यों के मुखिया गौ-मांस खाने वालों को खुश करने के लिए कहते हैं कि राज्य में गौ मांस की कमी नहीं होने दी जाएगी। उसके कुछ दिन बाद कह दिया जाता है कि गौ-मांस प्रतिबन्ध पर पुनर्विचार किया जाएगा। इसके पश्चात् केन्द्रिय स्तर पर घोषणा कर दी जाती है कि चमड़े के व्यापार को बढ़ाने के लिए चमड़े पर टैक्स कम किया जाएगा, तथा मांस के निर्यात को बढ़ाया जाएगा। यह मात्र दोगलापन नहीं तो और क्या है? अगर राजनेता इस मामले में गम्भीर हैं तो एक ही बात वर्षों तक नहीं कहते? अहिंसक समाज को लुभाने के लिए गौ-रक्षा की बात कह दो, जबकि वास्तविकता यह है कि अधिक विदेशी धन पाने के लालच में मांस और चमड़े को बढ़ावा दिया जा रहा है।

जैन संतों की तरफ से एक बार यह प्रयास किया गया कि सब लोग मांस निर्यात के खिलाफ आवाज उठाएं। एक नारा भी दिया कि 'मांस निर्यात बन्द करो'। सरकारें बदलीं, लेकिन इस संदर्भ में परिस्थितियाँ नहीं। बल्कि मांस और चमड़े का निर्यात और अधिक बढ़ गया है। जब गौवंश का वध नहीं हो रहा है तो

और अधिक गौमांस कहाँ से आ रहा है?

हिन्दुवादी वैदिक गणित की बात तो कहते हैं लेकिन जैनाचार्यों द्वारा गणित के विकास में किये गए योगदान का नाम तक नहीं लेते। जो गणित के अध्येता हैं वे इस बात को अच्छी तरह जानते हैं कि आचार्य वीरसेन, श्रीधराचार्य, महावीराचार्य आदि अनेक जैन आचार्यों का गणित के विकास में बहुमूल्य योगदान रहा है, वैदिक गणित से कहीं बहुत अधिक।

यदि हम जैन तीर्थों एवं मन्दिरों की बात करें तो आज उन पर भी राजनेताओं की मौन स्वीकृति के कारण हिन्दुओं द्वारा अनधिकृत कब्जा किया जा रहा है। जैन तीर्थ एवं मंदिर हमारी धार्मिक एवं सांस्कृतिक धरोहर हैं। पिछले लगभग 20-30 सालों में हमारे देखते-देखते गुजरात के गिरनार तीर्थ पर हिन्दुओं का लगभग पूरा कब्ज़ा हो गया है। जबकि कानूनी व्यवस्था यह है कि सन् 1947 में तीर्थों की जैसी स्थिति थी वैसी ही रखी जाए। गुजरात के ही पालीताना तीर्थ के बारे में कोई सपने में भी नहीं सोच सकता कि कभी कोई हिन्दू उस पर अपने अधिकार की बात करेगा। जून 2017 में हिन्दूवादी संगठनों ने आंदोलन किया तथा पालीताना में मोर्चा निकाला कि यह मात्र जैनों का ही नहीं हैं हिन्दुओं का भी है, अतः इस पर उनका भी अधिकार है। बिहार के मंदारगिरि का भी यही हाल हैं। अब तो तीर्थराज शिखरजी भी इसकी चपेट में आ रहा है।

अहमदाबाद में पिछले लगभग 2 वर्ष पूर्व सड़क चौड़ी करने के नाम पर साबरमती के एक प्राचीन चिन्तामणी पार्श्वनाथ श्वे. जैन मन्दिर का आधा हिस्सा तुड़वा दिया गया, जबकि इसी दौरान इस मंदिर के निकट सड़क के किनारे तीन नये हिन्दू मन्दिरों का निर्माण हो गया है। उनमें से एक तो काफी बड़ा बना लिया है। साबरमती से ही थोड़ी दूर पर पार्श्वनाथ नगर में एक पार्श्वनाथ श्वे. मन्दिर है। यह लगभग 40 वर्ष पुराना है। पिछले लगभग 2 वर्ष में इसके ठीक सामने हिन्दूओं ने एक हनुमान जी मन्दिर बना दिया है, वह भी अनधिकृत। जैन मन्दिर में मात्र प्रवेश करने भर तक की जगह छोड़ी है। लाउडस्पीकर इतना तेज चलता है कि जैन लोग ठीक से पूजा-अर्चना भी न कर सकें। यह तो कुछ ही उदाहरण हैं, और भी अनेकों हो सकते हैं। यह सब उन क्षेत्रीय राजनेताओं की स्वीकृति से होता है जो हिन्दुत्व के पक्षधर हैं।

जैनों की अनेकों शैक्षणिक संस्थायें भी हैं। हॉलाकि जैनों को अल्पसंख्यक माना गया है, अतः इन शैक्षणिक संस्थाओं को चलाने का स्वतंत्र अधिकार जैनों को मिलना चाहिए। लेकिन इन शिक्षण संस्थाओं में से अधिकतर में जैन प्राध्यापक/प्राचार्य तक नहीं हैं, कहीं हम जैनों की कमी के कारण और कहीं हिन्दू पक्षपात के कारण।

इतना सब होने पर भी हम भोले-भाले जैन हिन्दुत्व की बात आने पर रोमांचित हो जाते हैं, और जोर-जोर से तालियाँ पीटते हैं, साथ ही हिन्दुत्व का गुणगान करते भी नहीं थकते। गौ, गंगा और गीता की बात आती है तो हम उस बात में बह जाते हैं। आजकल व्हाट्सएप का जमाना है। मैंने पाया है कि कुछ जैन अपने व्हाट्सअप की दैनिक शुरूआत ही 'जय श्री राम', 'जय गौ माता', 'जय गंगा' आदि से करने लग गए हैं और 'जय जिनेन्द्र' या 'जय महावीर' भूल गए हैं। हिन्दू त्यौहारों, जैसे कृष्ण जन्माष्टमी, नवरात्रि आदि पर भी भक्ति प्रदर्शित करते हैं। गणेशजी को तो अनेकों ने अपना लिया है। इस तरह धीरे-धीरे जैन लोग हिन्दूधर्म की ओर आकर्षित हो रहे हैं। जैन लोग जैन बने रहेंगे तो जैन धर्म बचेगा, जैनत्व बचेगा। यदि ये लोग ही जैनत्व से विमुख हो गए तो जैन धर्म कैसे बचेगा।

जैन समाज के लोग तो भोले हैं, लेकिन दुःख तो तब होता है जब जैन संत भी हिन्दुत्व को आशीर्वाद देते नहीं थकते। राजनेता उनके साथ फोटो खिचवा लेते हैं तो हम तथा हमारे संत खुश हो जाते हैं। वस्तुतः राजनेता तो अपना राजनैतिक स्वार्थ सिद्ध करते हैं। इन फोटो को समाचार पत्र और टेलीविजन पर दिखाकर, और हम समझते हैं कि वे जैनधर्म के शुभचिंतक हैं।

कभी जैनों को यह कह कर डराया जाता है कि मुसलमान पूरे देश पर कब्जा कर लेंगे तो जैन धर्म नष्ट हो जाएगा। मात्र हिन्दू ही जैन धर्म की रक्षा करते हैं। इतिहास गवाह है कि जैनों का जितना अधिक नुकसान हिन्दुत्ववादी तीव्र प्रवाह के कारण हुआ उतना मुसलमान शासकों द्वारा या अन्य आक्रान्ताओं द्वारा नहीं हुआ। चाहे वह समय शंकराचार्य का हो या पं. टोडरमल का, चाहे वह बद्रीनाथ तीर्थ हो या तिरूपति बालाजी (बदरीनाथ में ऋषभदेव की मूर्ति है जबकि तिरूपति में नेमिनाथ भगवान् की) सर्वाधिक नुकसान हिन्दू अतिवादिता के कारण हुआ। बौद्ध अतिवादिता का भी जैनों को नुकसान उठाना पड़ा है, निकलंक उसके एक उदाहरण हैं। आज भी स्थिति वैसी ही हैए तरीका बदल गया है।

आए दिन इतिहास की पाठ्य पुस्तकों में भी छेड़छाड़ होती रहती है। कभी जैन धर्म को हिन्दू धर्म का हिस्सा बता दिया जाता है, कभी भगवान् महावीर को जैन धर्म का संस्थापक। कभी भगवान् महावीर का गलत परिचय छप जाता है तो कभी जैन सिद्धान्तों में परिवर्तन कर दिया जाता है, जैन सिद्धान्तों को विस्तार पूर्वक नहीं छापा जाता है। यह सब होता है पुस्तक

लिखने वाले की हिन्दूवादी मानसिकता और हिन्दुवादी संगठनों के समर्थन के कारण। आए दिन जैन बुद्धिजीवी इन मुद्दों पर अपनी आवाज उठाते रहते हैं। कभी आंशिक सफलता मिल जाती है और कभी नहीं।

आप किसी भी राजनैतिक पार्टी के समर्थक हों, आप किसी भी राजनेता को वोट दें, इससे किसी को क्या आपत्ति। यह आपका अपना व्यक्तिगत अधिकार है। लेकिन यह सोचकर न करें कि वह जैनत्व का हितैषी और शुभचिंतक है। वह तो हमेशा बहुसंख्यक के साथ ही रहेगा, यदि ऐसा नहीं होता तो जैन तीर्थ व मन्दिर आज सुरक्षित होते उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाया जाता। इतिहास की पाठ्य पुस्तकों में जैन धर्म के बारे में न्यायोचित कथन होता। सिर्फ गौ मांस पर ही नहीं बल्कि सभी जीवों के मांस पर रोक की बात कही जाती, कम से कम मांस निर्यात बन्द करने की बात तो उठती, जैसा कि हमारे जैनाचार्य ने अपील की थी तथा एक नारा भी दिया था- मांस निर्यात बन्द करो। मांस निर्यात कम होने के बजाय आज वह दिनोदिन बढ़ रहा है।

मेरा सम्पूर्ण जैन समाज से विशेषकर सभी सम्प्रदायों के जैन सन्तों से विन्रम निवेदन है कि परिस्थितियों को समझें तथा जैनत्व की रक्षा का यथा योग्य प्रयास करें। राजनेताओं के साथ फोटो प्रकाशित हो जाने भर से संतुष्ट न हो जायें, ऐसी फोटोओं से गलत सन्देश जाता है कि सन्त महात्मा इनके विचारों और क्रियाकलापों से सहमत हैं। मैं तो निवेदन करूंगा कि इससे बचें तो और भी अच्छा है। किसी भी प्रवाह में जैनत्व को बह न जाने दें। जैनों में जैनत्व की भावना जीवित रहेगी तभी जैन धर्म भी सुरक्षित रह सकेगा। जैन संतों से विन्रम अनुरोध है कि वे जैन लोगों में जैनत्व की भावना को प्रबल करने के प्रयास करें, उन्हें जैन धर्म, जैन गुरु तथा जैन तीर्थंकरों के प्रति आकर्षित होने के लिए प्रेरित करें।

-डॉ. अनिल कुमार जैन,
बापू नगर, जयपुर

....पृष्ठ 7 का शेष

महावीराचार्य : एक महान गणितज्ञ

महावीराचार्य जैन गणित पुरस्कार भी स्थापित किया गया है जो अब तक निम्नांकित विद्वानों को भव्य समारोह पूर्वक समर्पित किया जा चुका हैं :-

1. 2021-पद्मश्री प्रो. राधाचरन गुप्त, झांसी
2. 2022-प्रो. सुरेशचन्द्र अग्रवाल, मेरठ
3. 2023-प्रो. श्रेणिक कुमार बंडी, इन्दौर

जैन गणित के क्षेत्र में उत्कृष्ट अनुसंधान कार्य हेतु दिये जाने वाले महावीराचार्य जैन गणित पुरस्कार-24 हेतु विशेष विवरण पुरस्कार प्रायोजक से निम्नांकित पते से प्राप्त किये जा सकते हैं :-

डॉ. अनुपम जैन,
ज्ञानछाया, डी-14 सुदामानगर, इन्दौर-452 009
anupamjain3@rediffmail.com

महावीराचार्य कृत गणितसार संग्रह के नवीन परिष्कृत संस्करण के प्रकाशित होने एवं उसके प्रचार-प्रसार से जैन परम्परा के गणित के क्षेत्र में योगदान अर्थात् जैन गणित का गौरव बढ़ेगा। इससे अन्ततोगत्वा भारतीय गणित गौरवान्वित होगा।

-डॉ. अनुपम जैन
निदेशक- प्राचीन भारतीय गणित शोध केन्द्र
भारतीय ज्ञान परम्परा जैन गणित केन्द्र
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, खंडवा रोड़, इन्दौर (म.प्र.)

रिश्तों की अहमियत

सच्चे रिश्तों को कभी आजमाया नहीं करते,
हो जाए दूर कोई उसे भुलाया नहीं करते।
रिश्ते तो भगवान की देन है हमें,
हो जाए रुसवाई तो रिश्ता तोड़ा नहीं करते।
कर कद्र उन रिश्तों की जो बुरे वक्त में साथ होते हैं,
संभाल उन रिश्तों को जो एक आवाज़ पे पास आते हैं।
मतलब के रिश्ते तो हजारों है दुनियां में,
बेमतलब का जो साथ दे वो रिश्ते सबसे खास होते हैं।
रिश्ते अकसर टूट जाते हैं, गलतियां हो जाने से,
अपने रूठ जाते हैं, किसी की बातों में आने से।
हो जाए अनबन तो उसका हल निकालो,
सच्ची खुशियां मिलती हैं, अपनों के पास होने से।
रिश्ते हो अगर दिल के, उसे दुखाया नहीं करते,
कोई हो बात दिल में, उसे छुपाया नहीं करते।
बेझिझक बोल दो जो दिल में है बात,
हो जाए कोई गलतियां, तो रिश्तों को तोड़ा नहीं करते।
रिश्ते अगर निभा ना सको तो बनाओ मत,
झूठे रिश्ते मजबूरी के खातिर चलाओ मत।
रिश्ते तो ऊपर वाले की मेहर है,
सच्चे रिश्तों को संभालो उसे मिटाओ मत।

-आयुष जैन
सी-326, सूर्य नगर, अलवर

भावभीनी श्रद्धांजलि

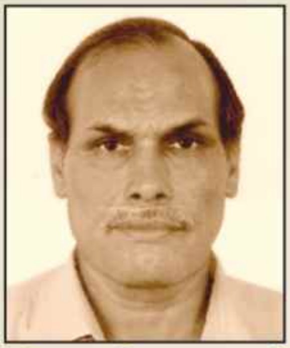

स्व. श्री महावीर प्रसाद जी जैन
(सुपुत्र स्व. श्री हरीशचन्द्र जी जैन)
(पुण्यतिथि : 21.5.2017)

स्व. ई. श्री मोहित कुमार जी जैन
(सुपुत्र स्व. श्री महावीर प्रसाद जी जैन)
(पुण्यतिथि : 9.8.2018)

हम आपको सादर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए
भगवान वीर से आपकी चिर आत्मीय शांति की प्रार्थना करते हैं।

श्रद्धावनत

श्रीमती मिथलेश जैन
(धर्मपत्नी)
डॉ. मेघा जैन-डॉ. पीयूष जैन
(पुत्री-दामाद)

श्रीमती मिथलेश जैन
(माँ)
डॉ. मेघा जैन-डॉ. पीयूष जैन
(बहन-बहनोई)

मोहित कुमार जैन ट्रस्ट (पंजि.)

ए/165, पालम एक्सटेंशन, सेक्टर 7, द्वारका, नई दिल्ली-110077
दूरभाष : 9599660709, 9599230509

हमारा अपना एक घर हो
सबका अपना

प्लॉट एवं विला उपलब्ध

navkar वाटिका कुबेर
अपनी ज़मीन अपनी छत
1 एवं 2.5 बीएचके घर, किफायती दर पर

RERA REGISTRATION NO.: RAJ/P/2019/961

मुख्यमंत्री जन आवास योजना के प्रावधानों के अन्तर्गत

खेरली की प्रथम गवर्नमेंट अप्रूव्ड आवासीय योजना

विकासकर्ता :
नवकार प्राईम डेवलपर्स प्रा. लि.
नवकार वाटिका, पेपर मिल, खेरली, जिला-अलवर (राज.)

Follow us on:
navkar.vatika

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें **+91 7891126673, +91 9414515121**

पवन जैन (चौधरी)
पार्षद, नगर पालिका खेरली
मो. : 9414020800

प्रतिष्ठान :

- अमित चन्द्रा टेक्सटाइल प्रा. लि., अलवर
- नवकार प्राइम डवलपर प्रा. लि., अलवर
- नवकार साड़ीज, अलवर
- नवकार वाटिका, खेरली
- नवकार ट्रेडिंग कम्पनी, अलवर
- शिखा टेक्सटाइल एजेंसी, अलवर
- अलवर सॉल्वेक्स, MIA, अलवर
- मै. पवन कुमार जैन, MIA, अलवर

निवास स्थान :- 1/544 काला कुआं, हाउसिंग बोर्ड, अलवर

भावभीनी श्रद्धांजलि
प्रथम पुण्यतिथि

स्व. श्रीमती कुसुम जैन

30.11.1952 to 14.12.2022

हम सभी परिवारजन आपको शत शत नमन व स्मरण करते हुए श्रद्धापूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं

पवन कुमार जैन *(पति)*
शिल्पा जैन *(पुत्रवधु)* स्व पीयूष जैन *(पुत्र)*
आयुष जैन-शिवानी जैन (पुत्र-पुत्रवधु)
श्वेता जैन (पुत्री) स्व आशीष जैन (दामाद)

आश्लेषा शाम्भवी पाविका(पौत्री)
शिवांक(पौत्र)
आशीता अनीका (नातिनी)

***Pawan Kumar Jain* (कोयले वाले)**
A67 Kailash Nagar
Near Amar Jyoti School
Gwalior 474010
Mob: 8319488274

Ayush Jain
F-53 Kalpataru Jade
Pancard Club Road
Baner, Pune 411045
Mob: 9665225652

प्रतिष्ठान: Mindbowser Infosolutions Pvt. Ltd

D.D. JAIN & CO.

ddjain_000@yahoo.co.in

BROKER & COMMISSION AGENTS :

EMPTY TIN 2, 5, 10 AND 15 LTR IN ALL QUALITY
HDPE JARS, CORROGRATED BOXES • LABLE • MULTI LAYER FILM

CONSULTNAT : OIL INDUSTRIES & PACKING MATERIAL PLANT
BRAND REGISTRATION • PATENT • TRADEMARK • COPYRIGHT
ISO • FSSAI REG. • MSME/SSI REGISTRATION • BARCODE

MANUFACTURERS & SUPPLIER OF :

PREMIX (VITAMIN A&D2) FOR OIL FORTIFICATION
EMPTY PET BOTTLES / JAR, PREFORMS
SEMI & FULLY AUTOMATIC BOTTLE/JAR/TIN FILLING MACHINES
POUCH MACHINE • STRAPPING MACHINE • SHRINK TUNNEL
ALUMINIUM FOIL & INDUCTION WED SEALING MACHINE
PRINTING MACHINE • BATCH CODER • MICRO FILTER
TICKLI AND SPOUT SEALING MACHINE ETC.

PALLIWAL UDYOG

udyogpalliwal16@gmail.com

YOUR'S SERVICE

yourservice99@yahoo.co.in

MANUFACTURERS & SUPPLIER OF :

PLAIN AND PRINTED BOTTLE CAP (AGMARK APPROVED PRINTER)
PVC SHRINK IN ALL SIZES • TICKLI AND SPOUT FOR TIN
STRAPPING ROLL • BOPP TAPE
ALUMINIUM / BLUSTER FOIL AND INDUCTION WED
ALL TYPE OF CAPS

OLD MACHINERY AND PLANT
ELECTRONIC ITEMS
LABOUR CONTRACTOR
CATERER & EVENT ORGANIZER
SERVICE PROVIDER
TRANSPORTER & OTHER SIMILAR SERVICES

MAHESH JAIN & CO.

companymaheshjain@gmail.com

T-22, ALANKAR PLAZA, CENTRAL SPINE
VIDHYADHAR NAGAR, JAIPUR-302023
PHONE : 0141-2232762, 2232766

MAHESH JAIN
+91-9414074476
jaindd2013@gmail.com

KAPIL JAIN
+91-9887093314

Awarded
Edible Oil
Motivator

शाखा सवाई माधोपुर

अ.भा.प. जैन महासभा शाखा सवाई माधोपुर के दिनांक 02.10.2023 को श्री कैलाश चन्द जैन (सेनि. अध्यापक) के सानिध्य में नवीन कार्यकारिणी के समस्त सदस्यों का निर्वाचन निर्विरोध सम्पन्न हुआ :-

अध्यक्ष- श्री राजकुमार जैन, ***उपाध्यक्ष***- श्री अरूण कुमार जैन, ***मंत्री***- श्री मुकेश कुमार जैन, ***कोषाध्यक्ष***- श्री अशोक कुमार जैन, ***सदस्यगण***- 1. श्री मनोज कुमार जैन, 2. श्री प्रमोद कुमार जैन, 3. श्री विजय कुमार जैन, 4. श्री रमेश चन्द जैन, 5. श्री विजय कुमार जैन, 6. श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, 7. श्री विकास कुमार जैन, 8. श्री सुनिल कुमार जैन, 9. श्री सतीश कुमार जैन, ***संरक्षक***- 1. श्री कैलाश चन्द जैन, 2. श्री सुरेश चन्द जैन, 3. श्री कमलेश कुमार जैन, 4. श्री रिद्धि सिद्धि जैन।

उपस्थित सभी कार्यकारिणी के सदस्यों को शपथ ग्रहण की कार्यवाही कर शपथ दिलाई गई, तत्पश्चात समाज का सामूहिक भोजन भी रखा गया उसके उपरांत मंदिर में नवकार मन्त्र जाप किया गया एवं सामूहिक महाआरती की गई उसके पश्चात् उपस्थित सभी के द्वारा एक दूसरे से क्षमा याचना की गई।

****

महिला मंडल शाखा ग्वालियर

ग्वालियर शाखा द्वारा आयोजित सामूहिक क्षमावाणी कार्यक्रम में अ.भा.प. जैन महिला मंडल (प्रज्ञामती) ने कई कार्यक्रम आयोजित किये। सांस्कृतिक मंत्री श्रीमती मिनी जैन ने छोटे-छोटे बच्चों के साथ सुंदर मंगलाचरण प्रस्तुत करवाया, देश की विविध संस्कृति को साथ लेकर स्वागत नृत्य द्वारा सभी अतिथियों को स्वागत किया। कार्यकारणी सदस्य श्रीमती कल्पना जैन ने सांस्कृतिक मंत्री अविनाश एवं सह-सांस्कृतिक मंत्री श्रीमती सुनीता जैन जी के साथ सारे खेलों का आयोजन करवाया। श्रीमती मधुलता जैन जी एवं श्रीमती अंजू जैन का मंच संचालन भी लाजवाब रहा। ग्रीटिंग कार्ड बनाओ प्रतियोगिता के निर्णायक श्रीमती (डॉ.) मीरा जैन एवं श्री पारस जैन और फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता के निर्णायक श्रीमती नीरा जैन एवं श्री संजीव जैन का भी बहुत-बहुत आभार। कव्वाली एवं नाटक की टीम ने कमाल की प्रस्तुति दी।

ग्वालियर शाखा ने महिला मंडल को सहयोग करने का आग्रह किया था जिसको सफल बनाने में अध्यक्ष श्रीमती रत्नप्रभा जैन जी के मार्गदर्शन में संपूर्ण महिला मंडल एवं मंत्री श्रीमती मीतू जैन ने कोई कसर नहीं छोड़ी। संपूर्ण महिला मंडल का बहुत-बहुत आभार एवं पूर्ण विश्वास है कि संपूर्ण महिला मंडल आगे भी ऐसे ही मिल कर कार्य करती रहेंगी।

****

शाखा पालम

दिनांक 04.11.2023 (शनिवार) प्रात: 10 बजे से दोपहर 01 बजे तक अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा, पालम शाखा के तत्वावधान में शिव मंदिर धर्मशाला, पालम गांव में फ्री हैल्थ मैडिकल जांच कैम्प का आयोजन किया गया। काफी संख्या में बुजुर्ग, महिलाओं, बच्चों ने जांच करवा कर लाभ प्राप्त किया। यह आयोजन बहुत सफल रहा।

****

णमोकार महामंत्र की श्रृंखला के दूसरे चरण में दिनांक 05.11.2023 रविवार प्रात: 09 बजे से 10 बजे तक श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर (अतिशय क्षैत्र), पालम गांव में णमोकार महामंत्र का जाप श्री अशोक कुमार जैन, रेखा जैन, राहुल, शिल्वी, सिद्धार्थ जैन एवं समस्त परिवार की ओर से अ.भा.प. जैन महासभा, पालम शाखा के तत्वाधान में कराया गया। काफी संख्या में धर्मप्रेमियों ने भाग लेकर धर्म लाभ प्राप्त किया।

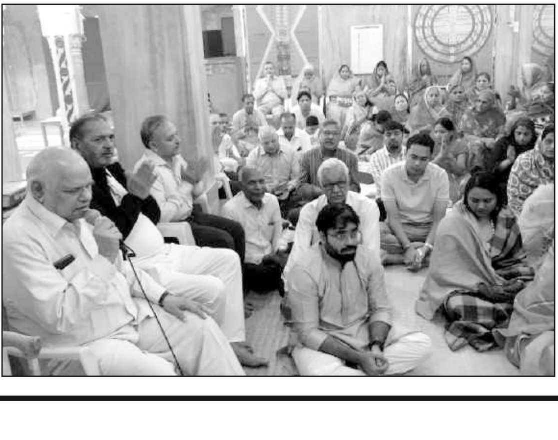

भावभीनी श्रृद्धांजलि

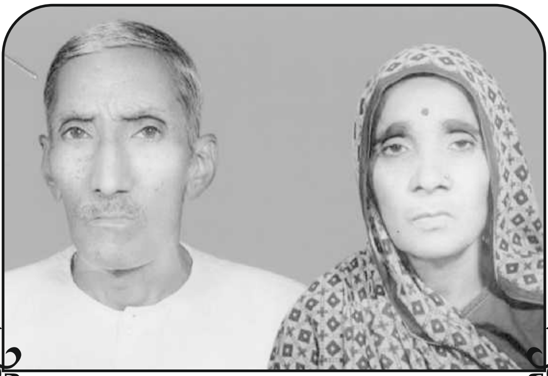

पूजनीय पिताजी स्व. श्री प्यारेलाल जी जैन चौधरी
श्रद्धेय माताजी स्व. श्रीमती असरफी देवी जी जैन
(मूल निवासी - मौजपुर, अलवर)

स्व. श्रीमती इन्दु जी जैन
(धर्मपत्नी श्री पदम चन्द जैन)
(स्वर्गवास : 30.12.2018)

हम सभी परिवार के सदस्य सादर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुये भगवान वीर से उनकी चिर आत्मीय शांति की प्रार्थना करते हैं।

श्रद्धावनत

पुत्र :
पदम चन्द जैन
पौत्र-पौत्रवधु :
पारस जैन-रश्मि जैन,
पौत्री-दामाद :
डिम्पल-राजेश जैन
सिम्पल-नितिन जैन
प्रिती-उत्तम कोठारी
पड़पोत्री-पौत्र :
चेल्सी जैन-अक्षत जैन

पुत्र :
अनूप चन्द जैन
पौत्र-पौत्रवधु :
हेमन्त जैन-मधु जैन
पौत्री-दामाद :
सुनिता-सुनिल
अनिता-परवेश
विनिता-प्रताप
पड़पौत्र :
रोबीन-मानस

निवास :
बी-52, कीर्ति नगर, टोंक रोड, जयपुर
फोन : 0141-2706317, 9829066317, 9414055855

भारतीय युवा और वर्तमान समय में भगवान महावीर का दर्शन सिद्धान्त

भगवान महावीर ने हमेशा ही जीवों को हिंसा और अपरिग्रह का संदेश दिया। महावीर के विचारों में जीवों की रक्षा कर लेना मात्र अहिंसा नहीं है। किसी भी प्राणी को तकलीफ नहीं पहुँचाना मात्र अहिंसा नहीं है। बल्कि यदि किसी को हमारी मदद की आवश्यकता है और हम उसकी मदद करने में सक्षम हैं फिर भी हम उसकी सहायता न करें तो यह भी हिंसा है।

मेरा यह आर्टिकल आज की युवा पीढ़ी के लिए है। यूथ आज की व्यस्ततम जिन्दगी में कैसे अपने आप को खुश रख सकता है, इसके लिए भगवान महावीर के सिद्धान्त बहुत प्रासंगिक है। माता-पिता होने के नाते, यह हमारी नैतिक जिम्मेदारी है कि हम अपने बच्चों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ में आध्यात्मिकता और नैतिकता के मूल्यों के साथ पोषित करें।

जीवन में यदि आप अपने सिद्धान्तों और धार्मिक मूल्यों के प्रति दृढ़ विश्वास के साथ एक ठोस चाल चलते हैं तो आपको कभी भी डर नहीं लगेगा। यह कुछ ऐसा है जो अपने बच्चों को उनकी बढ़ती उम्र में आधुनिक धर्म निरपेक्ष दुनिया का सामना करने के लिए याद दिलाते हैं। मुझे यकीन है कि यह उन्हें जीवन में सही समय पर बुद्धिमानी से निर्णय लेने में सक्षम बनाएगा।

विकसित होती तकनीक के साथ धर्म का विकास जब हम इस दुनिया में देखते हैं, हम इसमें रह रहे हैं और दिखाते हैं कि क्या इस धरती पर हर इंसान जैन धर्म के मूल्यों का पालन करता है तो प्रदर्शित तस्वीर एक 'परिपूर्ण तस्वीर' होगी। लेकिन उसके लिए, जैन सिद्धान्तों ने जिन आदर्श मूल्यों को चित्रित किया है, दुनिया को उन आदर्श मूल्यों से अवगत कराना बहुत महत्त्वपूर्ण है।

प्रौद्योगिकी और मीडिया की इस बदलती वैश्वीकृत दुनिया में जब वर्तमान पीढ़ी विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भाषा को अधिक व्यावहारिक रूप से समझती है तो जैन सिद्धान्तों के प्रचार के संशोधित तरीकों में से एक प्रौद्योगिकी के माध्यम से होगा। जब दुनिया को जैन सिद्धान्तों के अभ्यास से अर्जित आवश्यक लाभों के बारे में पता चलता है तो निश्चित रूप से एक व्यक्ति को इसका पालन करने के लिए इच्छुक होगा।

आज के समसामयिक समय में युवाओं से संवाद स्थापित करने में सोशल मीडिया और तकनीक की अहम भूमिका है। जब वर्तमान पीढ़ी प्रोग्राम्ड भाषाओं और आईटी मीडिया की ओर झुक रही है तो इसका उपयोग धार्मिक शिक्षाओं को बढ़ाने और इसे दुनिया भर में फैलाने के लिए क्यों नहीं किया जाता है?

भगवान महावीर ने पांच सिद्धान्त बताए जो आज भी समृद्ध जीवन और आंतरिक शांति की ओर ले जाते हैं। सैकड़ों वर्ष पूर्व भगवान महावीर ने विश्व को अहिंसा, जीव दया सहित मानव हित के कई संदेश दिए। कोरोना जैसी महामारी प्रकृति के साथ छेड़छाड़ का ही तो नतीजा है या यूँ कहें कि हिंसा का प्रतिफल ही कोरोना महामारी है। वर्तमान समय में हमें अहिंसा और जीवों पर दया व महावीर के सिद्धान्त ही ऐसी आपदाओं से पार पाने का मार्ग बताते हैं। यह समझना जरूरी है कि उत्साह से लबरेज आज की युवा पीढ़ी भगवान महावीर के संदेशों को किस रूप में देखती है? युवाओं के सपनों को साकार करने में इन संदेशों की क्या कोई अहमियत है? इन सवालों के जवाब पाने के लिए देखते हैं युवाओं के लिए तीर्थंकर महावीर की महत्त्वपूर्ण काम की बातें-

महावीर के सिद्धान्त और आज का यूथ : अब यहाँ यह सवाल उठाना स्वाभाविक है कि आज से हजारों साल पहले तीर्थंकर महावीर ने मानवता का जो संदेश दिया था, क्या वह आज भी उतना ही प्रासंगिक और महत्त्वपूर्ण है। यह समझना जरूरी है कि उत्साह से लबरेज आज की युवा पीढ़ी भगवान महावीर के संदेशों को किस रूप में देखती है और युवाओं के सपने को साकार करने में इन संदेशों की क्या अहमियत है। आज के यूथ में न तो प्रतिभा की ही कोई कमी है और न ही आत्मविश्वास की। उसे जरूरत है तो सकारात्मक प्रेरणा, सहयोग और सही दिशा की।

महावीर की वाणी के तीन आधारभूत मूल्य अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांत हैं। ये युवाओं को आज की भागमभाग और तनाव भरी जिन्दगी में सुकून की राह दिखाते हैं। महावीर की अहिंसा केवल शारीरिक या बाहरी न होकर,

मानसिक और भीतर के जीवन से भी जुड़ी है। दरअसल, जहां अन्य दर्शनों की अहिंसा समाप्त होती है, वहां जैन दर्शन की अहिंसा की शुरुआत होती है। महावीर मन-वचनकर्म, किसी भी जरिए की गई हिंसा का निषेध करते हैं ।

अनेकांत : दूसरों के विचारों का समाधान

आज का युवा जटिलताओं और दबावों से मुक्त होकर स्वतंत्र और सहज जीवन जीना चाहता है। विचार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर बंदिशों के दौर में महावीर का अनेकांतवाद और स्याद्वाद बेहद प्रासंगिक है। महावीर सत्य को सभी पहलुओं के साथ समझने का आह्वान करते हुए दूसरों के विचारों का सम्मान करने का संदेश देते हैं।

अहिंसा : जिओ और जीने दो

इस तरह महावीर खुद सुकून से जीने और दूसरों को भी जीने देने की राह सुझाते हैं। महावीर का यह कथन युवाओं को उत्साह और आत्मविश्वास से भर देता है। महावीर विश्व को क्षमा और विश्व शांति का अनूठा संदेश देते हैं। उनका जियो और जीने दो का संदेश आज विश्वभर के लिए मार्गदर्शक बनकर उभरा है।

अपरिग्रह : दूसरों की जरूरतों का सम्मान

अपरिग्रह यानी जरूरत से ज्यादा चीजों का संचय न करना। महावीर का अपरिग्रह का सिद्धान्त न केवल बाहरी परिग्रहों, बल्कि मन के विकारों और तनावों को भी त्यागने का भी संदेश देता है। यह वास्तव में वर्तमान समय में भौतिकवादी मांग की आवश्यकता के रूप में युवाओं के लिए एक महत्त्वपूर्ण कदम है।

निष्कर्ष : वर्तमान परिदृश्य में परिवर्तन लाने और धर्म को प्रगतिशील बनाने के लिए हम सभी को एक आलोचनात्मक दिमाग, लेकिन साथ ही एक खुले दिमाग की भी आवश्यकता है। जागरूकता लाएं कि जैन धर्म आज के युग में एकमात्र वैज्ञानिक धर्म है। हमें बिना किसी संदेह के महावीर और आचार्यों की शिक्षाओं को अनिवार्य रूप से स्वीकार करने की आवश्यकता है और उसी के साथ हमें अपने बच्चों का पालन-पोषण करने का प्रयास करने की आवश्यकता है, जो भविष्य की रूपरेखा तैयार करेंगे। इस आधुनिक वैज्ञानिक युग में जब हर चीज के मूल्य बदल रहे हैं तो यह समझना आवश्यक है कि 20-25 वर्षों के बाद जैन सिद्धान्तों द्वारा सिखाई गई ये पुरानी अनिवार्यताएं बहुत वैज्ञानिक प्रतीत होंगी और स्वस्थ जीवन जीने के लिए आवश्यक हो जाएंगी।

-डॉ. समा जैन

प्रोफेसर (रसायन शास्त्र), विभागाध्यक्ष पीआईईटी, सीतापुरा, जयपुर

प्रणाम का महत्व

महाभारत का युद्ध चल रहा था-

एक दिन दुर्योधन के व्यंग्य से आहत होकर ''भीष्म पितामह'' घोषणा कर देते हैं कि-

''मैं कल पांडवों का वध कर दूँगा।''

उनकी घोषणा का पता चलते ही पांडवों के शिविर में बेचैनी बढ़ गई। भीष्म की क्षमताओं के बारे में सभी को पता था इसलिए सभी किसी अनिष्ट की आशंका से परेशान हो गए।

तब, श्रीकृष्ण ने द्रौपदी से कहा अभी मेरे साथ चलो, श्रीकृष्ण द्रौपदी को लेकर सीधे भीष्म पितामह के शिविर में पहुँच गए। शिविर के बाहर खड़े होकर उन्होंने द्रोपदी से कहा कि- अन्दर जाकर पितामह को प्रणाम करो।

द्रौपदी ने अन्दर जाकर पितामह भीष्म को प्रणाम किया तो उन्होंने ''अखंड सौभाग्यवती भव'' का आशीर्वाद दे दिया, फिर उन्होंने द्रोपदी से पूछा कि, ''तुम इतनी रात में अकेली यहाँ कैसे आई हो, क्या तुमको श्रीकृष्ण यहाँ लेकर आये हैं?''

तब द्रोपदी ने कहा कि, ''हां और वे कक्ष के बाहर खड़े हैं'' तब भीष्म भी कक्ष के बाहर आ गए और दोनों ने एक दूसरे से प्रणाम किया।

भीष्म ने कहा- ''मेरे एक वचन को मेरे ही दूसरे वचन से काट देने का काम श्रीकृष्ण ही कर सकते हैं।''

शिविर से वापस लौटते समय श्रीकृष्ण ने द्रौपदी से कहा कि, ''तुम्हारे एक बार जाकर पितामह को प्रणाम करने से तुम्हारे पतियों को जीवनदान मिल गया है। अगर तुम प्रतिदिन भीष्म, धृतराष्ट्र, द्रोणाचार्य, आदि को प्रणाम करती होती और दुर्योधन-दु:शासन आदि की पत्नियां भी पांडवों को प्रणाम करती होतीं तो शायद इस युद्ध की नौबत ही न आती।''

तात्पर्य.... वर्तमान में हमारे घरों में जो इतनी समस्याए हैं उनका भी मूल कारण यही है कि जाने-अनजाने अक्सर घर के बड़ों की उपेक्षा हो जाती है। यदि घर के बच्चे और बहुएँ प्रतिदिन घर के सभी बड़ों को प्रणाम कर उनका आशीर्वाद लें तो, शायद किसी भी घर में कभी कोई क्लेश न हो। बड़ों के दिए आशीर्वाद कवच की तरह काम करते हैं उनको कोई ''अस्त्र-शस्त्र'' नहीं भेद सकता।

सभी इस संस्कृति को सुनिश्चित कर नियमबद्ध करें तो घर स्वर्ग बन जाय। क्योंकि-

प्रणाम प्रेम है, प्रणाम अनुशासन है।
प्रणाम शीतलता है, प्रणाम आदर सिखाता है।
प्रणाम से सुविचार आते है, प्रणाम झुकना सिखाता है।
प्रणाम क्रोध मिटाता है, प्रणाम आँसू धो देता है।
प्रणाम अहंकार मिटाता है, प्रणाम हमारी संस्कृति है।

तीर्थंकर नेमिनाथ एवं गोमेद-अम्बिका यक्ष-यक्षी

श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर, दमोह (मध्यप्रदेश) विश्वप्रसिद्ध तीर्थक्षेत्र के रूप में जगत् विख्यात है। क्षेत्र पर स्थित 63 जिनालयों के मध्य सन्तशिरोमणि दिगम्बर जैनाचार्य-प्रवर श्री विद्यासागर जी महाराज के आशीर्वाद, प्रेरणा, मार्गदर्शन व सान्निध्य में वंशीपहाड़पुर के गुलाबी पत्थरों से जीर्णोद्धार के उपरान्त श्री बड़े बाबा जी सहित त्रिकाल चौबीसी के जिनालय निर्मित हुए हैं। इनमें मूलनायक तीर्थंकर श्री ऋषभदेव जी आदि त्रिकाल चौबीसी के जिनबिम्ब विराजित हैं। कुण्डलपुर तीर्थक्षेत्र की सीमा रेखा परिधि स्वरूप बाउण्ड्रीबाल के बाहर स्थित मठ में एक प्रतिमा स्थापित थी। पुरातत्व विभाग की देखरेख में संचालित हो रहे इस मठ में स्थित प्रतिमा वर्ष 2002ई. में चोरी चली गई थी, जो बाद में राजस्थान प्रदेश के एक खेत में पड़ी मिली थी। पुलिस में दर्ज एफ.आई.आर. के कारण उक्त मूर्ति जप्त होकर मध्यप्रदेश के विदिशा जिले के ग्यारसपुर संग्रहालय में सुरक्षा हेतु रखवा दी गई थी। सन् 2019 में वहाँ से लाकर उसे रानी दमयन्ती संग्रहालय, दमोह में रखा गया था। दैनिक भास्कर, इन्दौर (मध्यप्रदेश) के 7 सितम्बर, 2023 ई. के अंक में पृष्ठ 8 पर उक्त प्रतिमा की फोटो को विवरण सहित प्रकाशित किया गया था (देखें चित्र क्रमांक 1)।

इस समाचार में प्रकाशित विवरण के अनुसार इसे ''श्रीकृष्ण-रुक्मिणी'' की प्रतिमा निरूपित किया गया था। विगत 22 सितंबर, 2023ई. को इसी आधार से ''श्रीकृष्ण एवं रुक्मिणी'' की तथाकथित मानी/कही जाने वाली इस प्रतिमा को भाद्रपद शुक्ल अष्टमी-राधा अष्टमी के दिन 21 वर्षों के पश्चात् उसी मठ में दुबारा स्थापित किया गया है।

दैनिक भास्कर, इन्दौर में प्रकाशित उपर्युक्त विवरण एवं फोटो का सूक्ष्मरीति से अवलोकन करके मध्यप्रदेश पुरातत्व अभिलेखागार एवं संग्रहालय, ग्वालियर (मध्यप्रदेश) के पूर्व संग्रहालयाध्यक्ष श्री नरेश कुमार पाठक ने परीक्षण के पश्चात् इस पुरातात्विक महत्व की प्रतिमा को जैन धर्म के बाईसवें तीर्थंकर श्री नेमिनाथ भगवान् सहित उनके शासन यक्ष एवं यक्षिणी के रूप में निरूपित किया है। पाठक के अनुसार, ''प्रतिमा विज्ञान की दृष्टि से महत्वपूर्ण यह युगल प्रतिमा गोमेद एवं अम्बिका की है। द्विभंग मुद्रा में गोमेद तथा अम्बिका खड़े हुए हैं। गोमेद का दायाँ हाथ दायें पैर पर है तथा बायें हाथ में सनाल कमल है। उसके दायें पैर के समीप संभवतः ज्येष्ठ पुत्र शुभंकर खड़ा होगा। गोमेद के बायीं ओर खड़ी अम्बिका का दायाँ हाथ दायें पैर पर तथा बायें हाथ से गोद में लिए हुए कनिष्ठ पुत्र प्रियंकर को सहारा दिए हुए है।''

नरेश कुमार पाठक ने इसे और अधिक विस्तार से प्रस्तुत करते हुए प्रतिपादित किया है कि, ''गोमेद किरीट मुकुट, कुण्डल, हार, श्रीवत्स, यज्ञोपवीत, वलय, मेखला धारण किये हुये है। अम्बिका केश विन्यास, कुण्डल, हार, वलय, मेखला धारण किये हुए है। वितान में दोनों के मध्य से निकलती हुई आम्रलुम्बि की दोनों के ऊपर आम्रवृक्ष की छाया है। उनके मध्य में तीर्थंकर नेमिनाथ की आसनस्थ प्रतिमा अंकित है। युगल मूर्ति के पादपीठ पर अंजली हस्तमुद्रा में हाथ जोड़े सेवक बैठे हुए हैं। बलुआ पत्थर पर निर्मित यह प्रतिमा संभवतः लगभग 12वीं शती ईसवी की प्रतीत होती है।''

श्री पाठक के अनुसार, ''तीर्थंकर श्री नेमिनाथ के यक्ष व यक्षी गोमेद-अम्बिका की सामान्यतः आसनस्थ प्रतिमाएँ ही मिलती हैं, लेकिन परमारकालीन एक द्विभंग मुद्रा में प्रतिमा ग्राम ऊन, जिला पश्चिमी निमाड़-खरगोन से प्राप्त हुई, जो वर्तमान में केन्द्रीय संग्रहालय, इन्दौर (मध्यप्रदेश) में सुरक्षित थी। वहाँ से लाकर वर्तमान में यह प्रतिमा देवी अहिल्या संग्रहालय, महेश्वर (पश्चिमी निमाड़-खरगोन) में सुरक्षित व स्थित है।''

भारतीय मूर्तिकला के क्षेत्र में जैन प्रतिमाओं का ऐतिहासिक और कलापक्षीय दोनों दृष्टियों से अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रहा है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी (उत्तरप्रदेश) के कला-इतिहास विभाग के व्याख्याता डॉ. मारुतिनन्दन प्रसाद तिवारी ने इसी विश्वविद्यालय से सन् 1977ई. में पी.एच.डी. की शोधोपाधि के रूप में शोध प्रबंध आलेखित किया था। संशोधित करके यह ग्रन्थ 'जैन प्रतिमा विज्ञान'[1] के नाम से पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान, आई.टी.आई. रोड, वाराणसी, उत्तरप्रदेश से ईसवी सन् 1981 में प्रकाशित हो चुका है। सात अध्यायों में वर्गीकृत इस ग्रन्थ में क्षेत्रीय दृष्टि से मुख्यतः उत्तर भारत को लक्ष्य में रखकर प्रारम्भ से लेकर बारहवीं शती ई. तक के कालक्रम को दृष्टि में रखकर तुलनात्मक दृष्टि से पूर्वी एवं दक्षिण भारत की प्रतिमाओं की भी चर्चा की गई है।

'जैन प्रतिमा विज्ञान' में डॉ. मारुतिनन्दन प्रसाद तिवारी ने उल्लेखित किया है कि जैन ग्रन्थों में यक्ष-यक्षियों का वर्णन जिनेन्द्र प्रभु के शासन एवं उपासक देव-देवियों के रूप में हुआ है। प्रारम्भ में

जिनों के दायीं ओर यक्ष एवं बायीं ओर यक्षिणी की प्रतिमा अंकित की जाती थी। फिर परवर्ती काल में इनका स्वतन्त्र उत्कीर्णन भी प्रारम्भ हो गया। किन्तु इनके मुकुटों पर या मस्तक के ऊपर की ओर छोटी जिन मूर्तियों को भी दर्शाया जाता था, जिससे उन्हें जिनों से सम्बद्ध और देवकुल से सम्बन्धित होना सिद्ध होता है। चौबीसों तीर्थंकरों में से प्रत्येक के पृथक्-पृथक् यक्ष-यक्षी का नाम, लक्षण तथा उनके आयुध आदि का वर्णन जहाँ ग्रन्थों में उपलब्ध होता है, वहीं पारम्परिक लक्षण सहित उनका शिल्पन मूर्तियों के रूप में उत्कीर्णन होना भी पाया जाने लगा।

जैन परम्परा के बाईसवें तीर्थंकर भगवान् श्री नेमिनाथ हुए हैं। इनके यक्ष का नाम गोमेद प्राप्त होता है। जैनों की दिगम्बर तथा श्वेताम्बर परम्पराओं में शास्त्रीय आधार से इन्हें गोमेद के अतिरिक्त सर्वानुभूति एवं कुबेर भी कहा जाता है।[2] इसी प्रकार यक्षी को अम्बिका, कुष्माण्डिनी तथा धर्मदेवी नामों से भी उल्लेखित किया जाता है।[3] गोमेद यक्ष का वाहन नर या पुष्प है। अम्बिका यक्षी को सिंहवाहना के रूप में वर्णित किया गया है। गोमेद को कहीं द्विभुज, कहीं चतुर्भुज, कहीं त्रिमुख होने से षड्भुज रूप में शिल्पित किए जाने का विधान है, तो यक्षी अम्बिका को द्विभुजा, चतुर्भुजा, षट्भुजा से लेकर बीस भुजाओं तक उत्कीर्णित किए जाने का वर्णन प्राप्त है। जब गोमेद को सर्वानुभूति या कुबेर के रूप में आमूर्तित किया जाता है तब उसके हाथ में धन का थैला अथवा फल भी प्रदर्शित मिलता है।[4] वह ललितमुद्रा या ललितासन में जब बैठा मिलता है तब वह एक पैर को मोड़कर पीठिका पर रखे होता है तो दूसरा पैर पीठिका से लटका हुआ होता है।[5] उसका वाहन गज होता है परन्तु कहीं-कहीं पर उसके स्थान पर निधियों के सूचक घटों के उत्कीर्ण किए जाने की परम्परा भी मिलती है।[6]

जैन सैद्धान्तिक परम्परा में देव-देवियों की सन्तान रूप पुत्र या पुत्रियों का होना निषिध्य माना गया है, किन्तु अम्बिका के साथ कभी एक तो कभी दो बालक भी दिग्दर्शित होते हैं, जिन्हें प्रियंकर (प्रभंकर) एवं शुभंकर के नामों से पुकारा जाता है।[7] वस्तुतः इनका पुत्र के रूप में चित्रण किया जाना पूर्व जन्म की कथा से सम्बद्ध होने के कारण से होता है। इनमें से छोटा बालक अम्बिका की गोद में होता है तो दूसरा बड़ा बालक उसके पैरों आदि के आस-पास खड़ा हुआ प्रदर्शित होता है। अम्बिका के हाथ में आम्रलुम्बि अथवा उसके सिर के ऊपर आम्रफलों से लदा हुआ आम्रवृक्ष भी शिल्पित होता है। बाईसवें तीर्थंकर श्री नेमिनाथ जिन की यक्षी अम्बिका को इनके अतिरिक्त कभी-कभी अन्य अनेक तीर्थंकरों के साथ में भी आमूर्तित किया हुआ पाया गया है।[8] इसे त्रिभंग, द्विभंग मुद्रा अथवा ललितमुद्रा या ललितासन में भी तक्षित हुआ पाया गया है।

गोमेद यक्ष के दो, चार या छह हाथों में तथा अम्बिका यक्षी के दो, चार, छह आदि भुजाओं में विविध प्रकार के आयुध या सामग्रियाँ भी देखी जाती हैं। यह विविधता उनके आकार-प्रकार तथा अलग-अलग हाथों में अदल-बदल कर उत्कीर्णित हुए होने से परिलक्षित होती है। देवगढ़, ग्यारसपुर, खजुराहो (मध्यप्रदेश), सहेठमहेठ, लखनऊ (उत्तरप्रदेश) आदि दिगम्बर जैन स्थलों पर प्राप्त मूर्तियों में गोमेद या सर्वानुभूति (कुबेर) के विविध हाथों में कपालपात्र, धन का थैला, फल, गदा, जलपात्र, पद्म, वरदमुद्रा, अभयमुद्रा, दण्ड, पाश और पुस्तक आदि दर्शाए गए होते हैं। श्वेताम्बर स्थलों में अकोटा, वसन्तगढ़, ओसिया, कुम्भारिया, आबू, बांसी, उदयपुर घाणेराव, तारंगा आदि गुजरात व राजस्थान प्रदेश इत्यादि में उसके हाथों में जलपात्र, कपालपात्र, फल, धन का थैला, पाश, अंकुश, अभय एवं वरदमुद्रा, परशु, पद्म, गदा, पुस्तक, वीजपूरक, चक्राकार पद्म आदि दृष्टिगोचर होते हैं।

यक्षी अम्बिका/कुष्माण्डिनी की मूर्तियाँ उत्तर भारत के देवगढ़, खजुराहो, मथुरा, ग्यारसपुर, खण्डगिरि, लखनऊ, दिल्ली, पटना, पाकबीरा एवं पूर्वी व दक्षिण भारत के पोट्टासिंगीदी, अम्बिकानगर, बरकोला, अयहोल, जिनकांची, कलगुमलई, अंगदि, मुर्तजापुर आदि दिगम्बर जैन स्थलों पर मिलती हैं। श्वेताम्बर स्थलों में अकोटा, ओसिया, धांक, कुम्भारिया, आबू, घाणेराव, नाडलाई, जालोर, तारंगा आदि गुजरात-राजस्थान में भी अम्बिका की मूर्तियाँ शिल्पित हैं। इसके विविध करों में आम्रलुम्बि, पुष्प, फल, चामर, पत्र, पुत्र, पाश, चक्र, कलश, अंकुश, पुस्तक, अभय एवं वरदमुद्रा, जलपात्र, आम्रफल, दर्पण, घण्टा, त्रिशूल आदि को भी उसके द्विभुजा, चारभुजा अथवा छह आदि भुजाओं में से यथायोग्य सामग्री को आमूर्तित किया जाता है।[9]

भारत वर्ष ही नहीं, विदेशों में भी तीर्थंकर नेमिनाथ जिन की प्रतिमा सहित गोमेद यक्ष एवं अम्बिका यक्षी की प्रतिमाएँ भी अनेकशः उपलब्ध हैं। लॉस एंजेल्स म्यूजियम, कैलिफोर्निया, अमेरिका में ईसवी की पाँचवीं-छठवीं शताब्दी की 50.8 सें.मी. लंबी, 28.57 सें.मी. चौड़ी, तथा 10.79 सें.मी. मोटी पाषाण युक्त प्रतिमा है, जो म्यूजियम नंबर एम.77.49 पर दर्ज है। इसमें गोमेद यक्ष ललितासन से बैठा है। दो भुजाओं में से दायीं भुजा जांघ पर स्थित है तो बायें हाथ में पुष्प सहित उसकी नाल को धारण किया दर्शाया गया है। वह कुंचित केश, कानों में कुण्डल, गले में हार, हाथों में मेखला रूप कड़े तथा कमर में वलय स्वरूप करधनी धारण किए हुए है। वहीं यक्षी अम्बिका भी ललितासन में स्थित है। उसके दायें हस्त में सनाल कमल/पुष्प है तो बायीं जंघा पर बैठे हुए पुत्र को बायें हाथ से वह सहारा दिए हुए है। विशिष्ट केश सज्जा, कुण्डल, हार, विशेष आभूषण स्वरूप वलय एवं मेखला रूप कड़े आदि को धारण किए हुए उत्कीर्णित किया गया है। यक्ष के दायीं ओर ज्येष्ठ पुत्र खड़ा

हुआ है तो दोनों के मध्य से आम्रफलों से युक्त आम्रवृक्ष आमूर्तित किया गया है। इसके दोनों ओर एक-एक देव इस वृक्ष को सहारा दिए हुए अथवा उस पर चढ़ने की चेष्टा करते हुए दिख रहे हैं। वृक्ष के ऊपर तीर्थंकर नेमिनाथ की पद्मासन लघु प्रतिमा है जिसके दोनों तरफहाथ में पुष्पमाल धारण किए हुए माल्यधर दृष्टिगोचर हो रहे हैं। सबसे नीचे दो पशु बने हैं जिनको हाँकने या चराने के लिए ले जाने हेतु प्रयासरत दोनों ओर दो-दो व्यक्ति उद्यम कर रहे हैं (देखें, चित्र क्रमांक-2)।

शिल्प सौन्दर्य से विशिष्ट छवियुक्त अत्यन्त मनोज्ञ व प्रभावक पाषाण निर्मित एक युगल प्रतिमा में गोमेद यक्ष आसन पर ललितमुद्रा में स्थित है। किरीट, कुण्डल, हार, यज्ञोपवीत, श्रीवत्स, वलय, मेखला आदि से अंकित इस द्विभुज आकृति का दायाँ हाथ अभयमुद्रा एवं बाएँ हाथ में फल प्रदर्शित है। द्विभुजा यक्षी अम्बिका भी ललितमुद्रा में है, जिसका दायाँ हाथ अभयमुद्रा में तथा बायाँ हाथ पुत्र को सहारा दे रहा है, जो उसकी बायीं जांघ पर बैठा है। वह मुकुट, कुण्डल, हार, वलय, मेखला आदि से विभूषित है। दोनों के पीछे भामण्डल शोभित हो रहे हैं। दोनों के बीच से वृक्ष निर्मित है जिसकी छाँव में ये दोनों स्थित हैं। कुछ ऊपर दोनों पार्श्वभागों में द्विभंग मुद्रा में स्त्रियाँ आकृत हैं। उनके ऊपर सर्पफणावली युक्त कायोत्सर्गस्थ दो जिन बिंब हैं जो तीर्थंकर श्री सुपार्श्वनाथ एवं पार्श्वनाथ के हैं। उसके ऊपर पद्मासनस्थ श्री नेमिनाथ बिम्ब के दोनों ओर द्विभंग मुद्रा वाले चमर ढुराते यक्ष, ऊपर दोनों ओर माल्यधर आमूर्तित हैं। विशेषता यह है कि कुछ नीचे पुनः दोनों तरफ कुछ और बड़ी आकृति के पुष्पमाल लिए माल्यधर अंकित हैं। पृष्ठभाग में अलंकृत भामण्डल बना हुआ है। सबसे नीचे घोड़ों पर सवार सात पुरुष अश्वारूढ़ हैं (देखें, चित्र क्रमांक-3)। इन्हें गोमेद-अम्बिका की अपेक्षा सर्वानुभूति और कुष्माण्डिनी नाम से पहचाना गया है।

बलुआ पत्थर पर उत्कीर्णित एक अन्य युगल प्रतिमा में सबसे ऊपर पाँच पद्मासनस्थ जिन प्रतिमाएँ निर्मित हैं। इन सभी के सिर खण्डित हैं। इनके दोनों ओर ललितमुद्रा में एक-एक बिम्ब और दृष्टिगोचर हो रहे हैं। इनके नीचे वृक्ष की संरचना है जिसके नीचे गोमेद यक्ष एवं अम्बिका यक्षी दोनों ही ललितासन में स्थित हैं। यक्ष किरीट, कुण्डल, हार, यज्ञोपवीत धारण किए हुए है तो अम्बिका मुकुट, कुण्डल, वलय एवं मेखला रूप कड़े आदि से विभूषित है। यक्ष का दायाँ पैर एवं दायाँ हाथ दोनों ही भग्न हैं। वह बायें हाथ में संभवतः सनाल कमल धारण किए है। अम्बिका के दायें हाथ में फल एवं बायाँ हाथ जांघ पर स्थित शिशु को सहारा दिए हुए है। दूसरा शिशु यक्ष के दायीं ओर खड़ा है। यक्षी अम्बिका का वाहन सिंह भी दाहिनी ओर अवलोकित हो रहा है। सबसे नीचे अंजलीबद्ध मुद्रा वाली 4-4 पुरुष आकृतियाँ तथा एक स्त्री आकृति भी बनी हुई है (देखें, चित्र क्रमांक-4)।

जिला मुख्यालय कोरापुट (ओड़िशा) से 10 कि.मी. पर कोलाब नदी के दक्षिणी किनारे पर स्थित ग्राम केचेला में 30 फीट ऊँचा एक जैन मंदिर है। उसमें भगवान् ऋषभदेव, महावीर, अम्बिका तथा जख्य-जख्यनी (यक्ष-यक्षिणी) आदि पाँच प्रतिमाएँ अवस्थित हैं। सुन्दर एवं श्रेष्ठ कलाकृति से समन्वित ये मध्यकालीन जैन धर्म की विशिष्ट संरचनाएँ हैं। पूर्व मूर्तियों की तरह इसमें भी गोमेद-अम्बिका आसन पर स्थित होकर ललितमुद्रा में हैं। गोमेद के दायें हाथ में फल है तो बायाँ हाथ जांघ पर रखा हुआ है। वह किरीट, कुण्डल, हार, बाजूबंद, वलय एवं मेखला रूप कड़े आदि को धारण किए हुए प्रदर्शित है। अम्बिका के दायें हाथ में फल और बायाँ हाथ पुत्र को सहारा दिए हुए है। मुकुट, हार, कुण्डल आदि से वह अलंकृत है। दोनों के सिर के पृष्ठ भाग में अलग-अलग प्रकार के भामण्डल संरचित हैं। दोनों के शिरोभाग से ऊपर वृक्ष स्थापित है, जिसकी सहायता से एक व्यक्ति मानों झूला झूल रहा है। कहीं यह अम्बिका के द्वितीय पुत्र की संरचना तो नहीं है? ऊपर पद्मासनस्थ श्री नेमिनाथ जिन के सिर पर छत्र-त्रय बना हुआ है। दोनों पार्श्वों में चमरधारक यक्ष खड़े हैं और उनके पीछे दोनों ओर माल्यधर हाथों में पुष्पमाला धारण किए हुए हैं। सबसे नीचे आठ आकृतियों में बीच में एक ललितमुद्रा में है, शेष उसके दाएँ व बाएँ बाजू में हैं। इनमें से कुछ स्पष्टतः स्त्री आकार में हैं, शेष की शारीरिक संरचना अस्पष्ट-सी है। संभव है, ये अष्ट-प्रवचन मातृकाएँ हो सकती हैं। बलुआ पत्थर में उत्कीर्णित यह गोमेद व अम्बिका यक्ष-यक्षिणी की प्रतिमा अपने वैशिष्ट्य के कारण आकर्षक बन गयी है।

इस प्रकार कुण्डलपुर में स्थापित तथाकथित श्रीकृष्ण-

रुक्मिणी की प्रतिमा वस्तुतः जैन धर्म के बाईसवें तीर्थंकर श्री नेमिनाथ जी के साथ उनके यक्ष-यक्षी गोमेद-अम्बिका (सर्वानुभूति-कुष्माण्डिनी) की ही सिद्ध होती है। इसकी संपुष्टि आलेख में उल्लेखित देश-विदेश में स्थित अन्य गोमेद-अम्बिका की मूर्तियों से साम्यता दर्शित हो ही रही है। अन्य प्रतिमाओं से भी तद्गत साम्यता, भिन्नता, विशिष्टता तथा कालगत व शिल्पगत पृथकता को दृष्टि में रखकर तुलनात्मक दृष्टि से परीक्षण किया जा सकता है।

-लेखक : अक्षय जैन,

श्री दिगम्बर जैन बडे मंदिर के पास, बंडा, सागर (म.प्र.)

सन्दर्भ :

1. *जैन प्रतिमा विज्ञान, लेखक- डॉ. मारुतिनन्दन प्रसाद तिवारी, प्रकाशक-पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी, उत्तरप्रदेश, सन् 1981 ई.,पृष्ठ-831634, मूल्य - 150/-रू.*
2. *विविधतीर्थकल्प,जिनप्रभ सूरिकृत, संपादक- मुनि जिनविजय, सिंघी जैन ग्रन्थमाला-10, कलकत्ता-मुम्बई, सन् 1934 ई., पृष्ठ-19*
3. *जैन प्रतिमा विज्ञान, शेष विवरण उपरिवत्, पृष्ठ-224*
4. *अकोटा ब्रोन्जेज, यू.पी. शाह., मुंबई, 1959, पृष्ठ-31*
5. *जैन प्रतिमा विज्ञान, शेष विवरण उपरिवत्, परिशिष्ट-4, 'पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या', पृष्ठ-267*
6. *मालादेवी टेम्पल ऐट ग्यारसपुर, कृष्णदेव, म.जै.वि.गो.जु.वा., बम्बई, 1968, पृष्ठ-264*
7. *आइकानोग्राफी ऑव दि जैन गॉडेस अम्बिका-यू.पी.शाह., ज.यू.बां.,खण्ड-9, भाग-2, 1940-41, पृष्ठ-147-148*
8. *जैन प्रतिमा विज्ञान, शेष वर्णन उपरिवत्, पृष्ठ-225*
9. *वही, पृष्ठ-218-231*

सुश्री नेहा जैन सुपुत्री श्रीमती कांता देवी जी जैन एवं श्री बालकिशन जी जैन, भगिनी श्री अभिनन्दन जी जैन, खेड़ा मंगल सिंह वाले, हाल निवासी खेड़ली की दिक्षा गुरुणी प.पू. साध्वी धैर्यनिधी श्री जी म.सा. की निश्रा में प.पू. आचार्य भगवन्त रत्नसुन्दर जी म.सा. के कर कमलों से बुधवार, 24 जनवरी 2024 को धुलिया (महाराष्ट्र) में होने जा रही है। अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा वीर परिवार और नेहा बहन को संयम पथ पर अग्रसर होने की भावना की खूब-खूब अनुमोदना करती है, साथ ही भावना रखती है कि नेहा बहन का संयमित जीवन सभी के लिए प्रेरणा स्रोत रहें।

ज्ञातव्य रहे कि इसी परिवार के चिराग अरिहन्त भाई ने भी पिछले वर्ष संयम जीवन अंगीकार किया था जो अभी प.पू. धैर्यसुन्दर जी म.सा. की निश्रा में प.पू. वीरसुन्दर जी म.सा. मुनि रुप में धर्म आराधना एवं प्रभावना कर रहे हैं।

बुढ़ापा

सुबह सुबह किसी ने द्वार खटखटाया।
मैं लपककर आया, जैसे ही दरवाजा खोला
तो सामने बुढ़ापा खड़ा था।
भीतर आने के लिए जिद पर अड़ा था....

मैंने कहा 'नहीं भाई! अभी नहीं!!
अभी तो मेरी उमर ही क्या है!!...'

वह हँसा और बोला,
बेकार की कोशिश ना कर,
मुझे रोकना नामुमकिन है!!

मैंने कहा.. 'अभी तो कुछ दिन रहने दे,
अभी तक अपने ही लिए जिया हूँ...
अब अकल आई है, तो कुछ दिन
दूसरों के लिए और दोस्तों के साथ भी जीने दे...'

बुढ़ापा हंस कर बोला
'अगर ऐसी बात है तो चिंता मत कर...
उम्र भले ही तेरी बढ़ेगी, मगर बुढ़ापा नहीं आएगा!!

तू जब तक दूसरों के लिए और
दोस्तों के साथ जीएगा,
खुद को जवान ही पाएगा...'

तो दोस्तों! चलो
आज से ही बढ़ती उम्र का लुत्फ उठाइये!
दूसरों और दोस्तों के लिए जीना शुरू करें
और अपने बुढ़ापे को जवान बनाएं!

दूसरों की सहायता करें और
दोस्तों की महफिल सजाते रहें!!

जब तक जिंदा रहें, जवान रहें!

PRODUCTS :
Transmission Line Towers (HT&LT), Telecom Towers, Wind Mill Structures, Sub-Station Structures, Lattice Structures, RSJ Poles & GI Earthing Strips.

FULLY EQUIPPED ULTRA MODERN FABRICATION AND GALVANIZING PLANT WITH EOT CRANES, HOISTS, POWER TROLLEYS, TESTING LABS & ETP SYSTEM TO ENSURE GREEN ENVIRONMENT

Fabrication & Galvanizing done as per
IS, BIS, ASTM, DIN & ISO Standards
Bath Size : 9m (L) x 0.8m (W) x 1.4m (D)
Plant Capacity : 18000 Tons / Year

Vijay Transmission PVT. LTD.

Vijay Transmission
PVT. LTD.

Plant :
PNH No. 100, Village Kanhera, Block Dharsiva, Uria Acholi Marg, Dist. Raipur-492001
Tel.: (0771) 305 4900 • Fax : (0771) 232 3162

Corporate Office :
210, 211, 2nd Floor, Kamla Space, S.V. Road, Santacruz (West), Mumbai-400054
Tel.: 022-262183401 • Fax : +91-022-26609915
E-mail : info@vijaytransmission.com

अष्टम पुण्यतिथि पर भावभीनी श्रद्धांजलि

स्व. श्री विमल चन्द जी जैन

(प्राचार्य केन्द्रीय विद्यालय - से.नि., आगरा निवासी)

(जन्म : 06.09.1939 - स्वर्गवास : 25.11.2015)

आपका स्नेह, सद्व्यवहार, सेवा भावना, धर्म के प्रति आस्था एवं प्रेरणादायक चरित्र हमारी स्मृति में सदा रहेगा एवं सदैव मार्गदर्शन करता रहेगा। हम सभी आपको शत्-शत् नमन करते हुए अश्रुपूरित श्रृद्धांजलि अर्पित करते हैं।

श्रद्धावनत

श्रीमती संतोष जैन *(पत्नी)*

पुत्र-पुत्रवधु :
डॉ. पवन कुमार जैन-भारती जैन
कमल जैन-वर्षा जैन
पंकज जैन-दिव्या जैन

पौत्र, पौत्री :
आयुषी, दिव्यांश, हिमांशु,
कार्तिक, आन्या

पुत्री-दामाद :
सीमा जैन-अरूण जैन
अनिता जैन-राजेश सेठ
डिम्पल जैन-रवीश जैन

धेवते, धेवती :
आकांक्षा-नमन,
स्वपनिका, करण,
कुनाल, सूर्यांश, शौर्य

समस्त सलावदिया परिवार

निवास : 8-9-152, धातु नगर, कंचनबाग, हैदराबाद
मोबाईल : 9849446456, 9849302009, 9810204976

Cargomen™
LOGISTICS (INDIA) PVT. LTD.
Your Trusted Logistics Partner

TMEN SYSTEMS PVT. LTD.

श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका के संरक्षक सदस्य

श्री देवकी नन्दन जी जैन
महुआ, दौसा

श्री कुशल चन्द जी जैन
ग्वालियर

श्री प्रद्युमन कुमार जी जैन
अलीगढ़

श्री विवेक कुमार जी जैन
भरतपुर

श्री शिखर चन्द्र जी जैन सिंघई
आगरा

श्री निर्मल कुमार जी जैन
आगरा

श्री ज्ञानचन्द्र जी जैन
अलीगढ़

S. R. ENTERPRISES

TRANSASIA

Roche

TOSOH

BIOMÉRIEUX

Ortho-Clinical Diagnostics

a Johnson & Johnson company

Abbott

BIO-RAD

SD BIOSENSOR,INC.

Stago

Diagnostics is in our blood.

B-18&19, Jai Jawan Colony Scheme No. 1st, Tonk Road, Jaipur-302018 (Rajasthan)

(M) +91-9829012628, +91-9414076265 E-mail : srindiaentp@yahoo.com

सामाजिक चिंतन

एक दिन मैं एकान्त में बैठी हुई थी, मन में विचार मंथन चल रहा था। अभी हाल ही में दीपावली की त्यौहार आया था, त्यौहार से पहले सभी मुख्यत: अपने घरों में साफ-सफाई में लगे हुए थे। घरों को रंग-रोगन कराया जा रहा था। घरों को सजाने के लिए तरह-तरह के समान खरीदे जा रहे थे। बाजारों में भी शॉपिंग कर रहे लोगों की अच्छी खासी भीड़ थी। कपड़े, वाहन, मिठाईयां खरीदी जा रही थी। चारों ओर खुशहाली का माहौल था। हम जैन बंधुओं के लिए इस दिन का महत्व और भी अधिक था क्यूंकि भगवान महावीर का निर्वाणोत्सव भी दीपावली का ही दिन था। ऐसे में मेरा मन थोड़ा विचलित भी हुआ और मन में ख्याल आ रहा था जिस तरह लोग दीपावली की तैयारी में लगे हुए थे, साफ-सफाई और घरों की सजावट में लगे हुए थे क्यों न वे अपने मन की रज को साफ करते हैं। अगर हम सब अपने मन की कषायों को धर्म और ज्ञानरूपी धूप देकर, साबुन व डिटर्जेंट से रगड़कर साफ करते हैं तो इससे हमारे कर्मों की निर्जरा भी होगी और हमारे समाज में विद्यमान अनेक बुराइयां दूर होगी जिससे सामाजिक सुधार सम्भव हो सकेगा।

वर्तमान में समाज का आर्थिक व शैक्षिक स्तर तो सुधरा है किन्तु अधिकांश परिवारों में दहेज प्रथा, भाईचारे का अभाव, पुत्र प्राप्ति की समस्या, स्त्रियों को कोई महत्व नहीं देना आदि बुराईयां आज भी देखने को मिलती हैं। जिससे तलाक जैसी बुराई भी अपने पांव पसारने लग गयी हैं। यह अत्यन्त शोचनीय और वेदनीय विषय है जिससे समाज में प्रदूषण बढ़ता जा रहा है।

शादी ब्याह का माहौल एक परिवार में उत्सव से भी बढ़कर होता है। हर परिवार की अपेक्षा होती है कि उसके घर में एक सुन्दर, शिक्षित और संस्कारशील बहू या दामाद आये। कई बार ये अपेक्षाएं पूर्ण भी होती है और कई बार ये अपेक्षा पूर्ण नहीं हो पाती हैं। जिससे मतभेद का वातावरण उत्पन्न होता है, यहां तक कि रिश्ते टूट भी जाते हैं और इसका एकमात्र कारण मान लिया जाता है कि मायके वालों या माँ की दखलअंदाजी से घर बिगड़ रहे हैं। लेकिन मैं यही कहूंगी कि यह भी एक कारण हो सकता है किन्तु मात्र एक यही कारण है ऐसा कदापि नहीं है। परिवार के सदस्यों में समझदारी का अभाव, अहं, लड़के के माता-पिता द्वारा निजी मामलों में अनावश्यक हस्तक्षेप, गलत संगति, शादीशुदा ननद का अनावश्यक पीहर में हस्तक्षेप आदि अनेक कारण परिवार टूटने के लिए उत्तरदायी हो सकते हैं।

हर बच्चे के शादी के बाद की लाइफ के अपने सपने होते हैं। कोई भी लड़की यह सोचकर अपने पिता के घर से विदा नहीं होती है कि अब ससुराल में जाकर मुझे ये चाल चलनी है। अनेक बार प्रतिकूल परिस्थितियां आ जाने पर छोटी-छोटी अनबन बड़ी परेशानियों का कारण बन जाती हैं।

अगर दामाद बेटी को खुश रखता है तो सास-ससुर को वह दामाद अच्छा लगता है और जब उनका ही बेटा बहू को खुश रखना चाहे तो वो माता-पिता की नजरों को बुरा लगने लगता है। यह एक कटु सत्य है। एक समय था जब कम उम्र में विवाह होते थे। लडका व लड़की दोनों ही बेरोजगार होते थे तो परिस्थितियां व उम्र के अनुसार वो लम्बा जीवन सफर कठिनाईयों में भी तय कर लेते थे। लेकिन आज समय बदल चुका है। 27-28 वर्ष या उससे भी अधिक उम्र में विवाह होते हैं। दोनों ही बराबर शिक्षित और बराबर कमाने वाले होते हैं। सबका अपना सेल्फ रेस्पेक्ट भी होता है। ऐसी स्थिति में न तो लड़का पूरी तरह से अपना स्वभाव बदल सकता है और न ही लड़की अपना स्वभाव बदल सकती है। एक-दूसरे को खुश रखने वा परिवार की खुशी के लिए उन्हें अपना अहं दरकिनार करना चाहिए और हर माता-पिता को भी ध्यान रखना चाहिए कि उनके प्रत्येक निजी फैसलों में ज्यादा दखलंदाजी ना करे। माता-पिता राय दे सकते हैं लेकिन उन्हें अपना निर्णय बच्चों पर थोपना नहीं चाहिए। निर्णय उन्हें स्वयं लेने दे, वो बड़े हो गए हैं इसलिए ही तो आपने उनकी शादी की है। उनके निजी निर्णय भी अगर आप ही लेंगे तो वो उम्र में बड़े होते जाएंगे लेकिन ज्ञान में छोटे ही रह जाएंगे। शादीशुदा बच्चे आपको सूचित करते हैं ये अच्छी बात है लेकिन आपकी अनुमति या सहमति के बाद ही हमेशा घर से बाहर कदम रखें यह कदापि उचित नहीं है। अनावश्यक हस्तक्षेप अनेक बार बच्चों की अच्छी खासी जिन्दगी में आपसी दूरियां बढ़ा देता है।

अच्छे दामाद या अच्छी बहू का सपना तभी साकार हो सकेगा जब पारिवारिक वातावरण भी अच्छा बना रहे। रिश्तों की डोर कभी झूठ या दिखावे से नहीं चलती है। रिश्ता तय करते समय हर माता-पिता स्वयं पूर्ण संतुष्ट हो तब ही रिश्ता तय करें, किसी पर आंख बंद कर भरोसा न करें। मीडिएटर का रोल शादी कराने तक ही रहता है। विपरीत परिस्थितियां आने पर वह समस्या निराकरण में भूमिका नहीं निभाता, बल्कि पल्ला झाड़ भाग जाता है। बाकी सब कर्मो का खेल है... जैसी प्रभु की इच्छा। काफी हद तक इन बातों को ध्यान में रखकर घर-परिवार को बचाया जा सकता है।

ये मेरे अपने विचार हैं। फिर भी मेरे इन विचारों से कोई आहत हुआ है तो मैं क्षमा प्रार्थी हूं।

-रजनी जैन
80, शक्ति नगर, जयपुर

1. Smt. Seema Jain W/o Sh. Mukesh Kumar Jain, 264(B), Surya Nagar near Sudama kuti Gopalpura Bypass Jaipur 302015 (CR-7928)
2. Mahima Jain D/o Sh. Mukesh Kumar Jain, 264(B), Surya Nagar near Sudama kuti Gopalpura Bypass road Jaipur 302015 (CR-7929)
3. Muktika Jain D/o Sh. Mukesh Kumar Jain, 264(B), Surya Nagar near Sudama kuti Gopalpura Bypass Road Jaipur 302015 (CR-7930)
4. Sh. RajKumar Jain S/o Sh. Mahendra Kumar Jain, 67/12, Sumitra Sadan, Heera Path, Mansarovar, Jaipur 302020 (CR-7931)
5. Smt. Anjali Jain W/o Sh. Rajkumar Jain, 67/12, Sumitra Sadan, Heera Path, Mansarovar, Jaipur 302020 (CR-7932)
6. Sh. Tanmay Jain S/o Sh. Rajkumar Jain, 67/12, Sumitra Sadan, Heera Path, Mansarovar, Jaipur 302020 (CR-7933)
7. Sh. Rakesh Jain S/o Late Sh.Mahendra Kumar Jain, 185, Mohan Nagar, Gopalpura Bypass Road Jaipur, Durgapur, Rajasthan 302018 (CR-7934)
8. Smt. Reeta Jain W/o Sh. Rakesh Jain, 185, Mohan Nagar, Gopalpura Bypass Road Jaipur, Durgapur, Rajasthan 302018 (CR-7935)
9. Sh. Sambhav Jain S/o Sh. Rakesh Jain, 185, Mohan Nagar, Gopalpura Bypass Road Jaipur, Durgapur, Rajasthan 302018 (CR-7936)
10. Kajal Jain D/o Sh. Rakesh Jain, 185, Mohan Nagar, Gopalpura Bypass Road, Durgapur, Jaipur, Rajasthan 302018 (CR-7937)
11. Sh. Suresh Chand Jain S/o Late Sh. Moti Lal Jain, Plot No- 62, Mahavir Nagar gloyawas, Mansarovar, Jaipur 302018 (CR-7938)
12. Smt. Sapna Jain W/o Sh. Suresh Chand Jain, Plot No-62, Mahavir Nagar gloyawas, Mansarovar, Jaipur 302020 (CR-7939)
13. Sh. Naman Jain S/o Sh. Suresh Chand Jain, Plot No-62, Mahavir Nagar gloyawas, Mansarovar, Jaipur 302020 (CR-7940)
14. Sh. Rajesh Kumar Jain S/o Sh. Ramesh Chand Jain, 60, Mahaveer Nagar, Muhana Road, Golyawas, Jaipur, Rajasthan 302020 (CR-7941)
15. Smt. Priti Jain W/o Sh. Rajesh Kumar Jain, 60, Mahaveer Nagar, Muhana Road, Golyawas, Jaipur, Rajasthan 302020 (CR-7942)
16. Sh. Hitesh Jain S/o Sh. Shikhar Chandra Jain, A-81, Mahesh Nagar, near Jain Temple, 80 feet Road, Jaipur, Rajasthan 302015 (CR-7943)
17. Smt. Mamta Jain W/o Sh. Hitesh Jain, A-81, Mahesh Nagar, near Jain Temple, 80 feet Road, Jaipur, Rajasthan 302015 (CR-7944)
18. Sh. Vijendra Kumar Jain S/o Late Sh.Chandar Mal Jain, A-72, Mahesh Nagar, Jaipur 302015 (CR-7945)
19. Smt. Shashi Jain W/o Sh. Vijendra Kumar Jain, A-72, Mahesh Nagar, Jaipur 302015 (CR-7946)
20. Sh. Laksh Jain S/o Sh. Vijendra Kumar Jain, A-72, Mahesh Nagar, Jaipur 302015 (CR-7947)
21. Sh. Vimal Kumar Jain S/o Sh. Manohar Lal Jain, 124/248, Aggrawal farm, Mansarovar, Jaipur 302020 (CR-7948)
22. Sh. Lokesh Kumar Jain S/o Sh. Gulab Chand Jain, 57-A, Vijay Nagar, V.T. Road k Samne Mansarovar, Jaipur 302020 (CR-7949)
23. Sh. Arihant Jain S/o Sh. Trilok Chand Jain, Plot No-744A, Ist Floor, Devi Nagar, New Sanganer Road, Jaipur 302019 (CR-7950)
24. Sh. Rajkumar Jain S/o Sh. Ashok Kumar Jain, Sec. 11 A/296 EWS Aavash Vikash Colony, Sikandra, Agra-282007 (U.P.) (CR- 8152)
25. Priyanka Jain D/o Sh. Raj Kumar Jain, Sec. 11 A/296 EWS Aavash Vikash Colony, Sikandra, Agra-282007 (U.P.) (CR- 8153)
26. Sh. Vipin Jain S/o Sh. Ashok Jain, 1/115 Babu Gulab Ram Marg, Holi Nursury School ke Samne, Delhi Gate, Agra-282002 (U.P.) (CR- 8154)
27. Sh. Anil Kumar Jain S/o Sh. Ashok Kumar Jain, Sec. 1/136, Aavash Vikash Colony, Sikandra, Agra-282007 (U.P.) (CR- 8155)
28. Smt. Renu Jain W/o Sh. Anil Kumar Jain, Sec. 1/136, Aavash Vikash Colony, Sikandra, Agra-282007 (U.P.) (CR- 8156)
29. Sh. Tushar Jain S/o Sh. Anil Kumar Jain, Sec. 1/136, Aavash Vikash Colony, Sikandra, Agra-282007 (U.P.) (CR- 8157)
30. Sh. Shivam Jain S/o Sh. Anil Kumar Jain, Sec. 1/136, Aavash Vikash Colony, Sikandra, Agra-282007 (U.P.) (CR- 8158)

विधवा सहायता

★ **श्री रमेश चन्द जी जैन एवं श्री पंकज जी जैन,** दिल्ली जैन पब्लिक स्कूल बिल्डिंग, 12-रेलवे रोड, पालम कॉलोनी, नई दिल्ली-77 ने विधवा सहायता हेतु रु. 11,000/- भेंट किये। *(र.सं. 8204)*

★ **श्री प्रशान्त जी शैलेश जी जैन**, कोटा ने विधवा सहायता हेतु रु. 12,000/- भेंट किये। *(र.सं. 8205)*

★ **श्री आशीष जी जैन, आर. के. जैन**, मुनिरका, दिल्ली ने विधवा सहायता हेतु रु. 12,000/- भेंट किये। *(र.सं. 8207)*

बधाई

रूबल जैन (बाल कलाकार, थिएटर आर्टिस्ट, मॉडल एवं डान्सर) निवासी लखनऊ को दिनांक 29 व 30 अक्टूबर 2023 को गणनी आर्षमती माताजी के पावन सानिध्य में आगरा में आयोजित आचार्य ज्ञान सागर जी का ड्रीम प्रोजेक्ट प्रतिभा सम्मान समारोह में सम्मानित किया गया। उनकी अनुपस्थिति में यह सम्मान उनकी माताजी ने ग्रहण किया।

रूबल लखनऊ जू सहित अनेक संस्थाओं के ब्रांड एम्बेस्डर हैं एवं 450+ डांस स्टेज शो, 10 मूवी, 2 सीरियल, 2 वेब सीरिज, कई शार्ट मूवीज व डॉक्यूमेन्ट्रीज की हैं।

रूबल ने कई अवार्ड भी प्राप्त किए हैं, जिनमें International Children's Film Festival Award (Lucknow), Nepal-Bharat Matri Sammelan Award (Nepal), Rashtriya Ratna Award (Haryana), Young Achievers Award (Delhi), Leaders of Agra Award (Agra), Universal Excellence Award (Faridabad), Dhani Chunariya Award (Lucknow), Kala Ratna Samman Award (Lucknow), U.P. Bal Ratna Award (Lucknow), Neta Tumhi Ho Kal Ke Award (Delhi), Haryana Gaurav Award (Narnoul) प्रमुख हैं।

अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा रूबल के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए हार्दिक बधाई व शुभकामनाऐं प्रेषित करती है।

महासभा सहायता

★ **श्री नरेन्द्र कुमार जी जैन** पुत्र श्री फूलचन्द जैन, नौगांवा ने महासभा सहायता हेतु रु. 1100/- सप्रेम भेंट किये। *(र.सं. 8206)*

राशि जैन पुत्री श्रीमती चमन जैन एवं श्री सुभाष चन्द जैन, निवासी धौलपुर द्वारा सीनियर सैकण्डरी परीक्षा में 96% अंक प्राप्त करने पर राजस्थान सरकार द्वारा कालीबाई स्कूटी योजना के तहत दि. 29.09.2023 को धौलपुर में आयोजित कार्यक्रम में स्कूटी प्रदान कर सम्मानित किया गया। अ.भा.प. जैन महासभा राशि के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए हार्दिक बधाई व शुभकामनाऐं प्रेषित करती है।

दिवाकर जैन पुत्र श्री अभिनन्दन जैन (परवैनी वाले), 75/42, टैगोर लेन, शिप्रा पथ, मानसरोवर, जयपुर द्वारा RAS-2021 में 279वीं रेंक प्राप्त कर पल्लीवाल जैन समाज का नाम रोशन किया। अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा दिवाकर के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए हार्दिक बधाई व शुभकामनाऐं प्रेषित करती है।

खुशी जैन, वर्धमान नगर, हिण्डौन सिटी ने 12वीं (आर्ट्स) की परीक्षा 79 प्रतिशत अंक प्राप्त कर उत्तीर्ण की। अ.भा.प. जैन महासभा खुशी के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए हार्दिक बधाई व शुभकामनाऐं प्रेषित करती है।

श्री मनीष जी जैन ने अपनी धर्मपत्नी **श्रीमती ज्योति जैन** (अध्यापिका), चित्तौड़गढ़ के जन्मदिन (3 दिसम्बर) के उपलक्ष्य पर पत्रिका सहायता हेतु रु. 1100/- सप्रेम भेंट किये। *(र.सं. 3085)*

सुसंस्कार

हे भव्य जीव, सुसंस्कार तो जीवन की ज्योति है, सुसंस्कार मनुष्य से मानवता बनाने की फैक्ट्री है। सुसंस्कार ही अच्छे विचारों की उत्पत्ति करता है। मन को डोरी से बांध कर रखता है। आत्मा को प्रकाश को जगमगाता है, खुशियों की वर्षा करता है तथा घर को महकाता हुआ ऊँचाईयों की ओर ले जाता है। संस्कारों के दीपक जब जलते हैं तो चेहरा चाँद की भांति खिलता रहता है।

हे श्रेष्ठी जन - घर का दरवाजा आवाज दे कर गूंज रहा है, बिना कांटो के गुलाब नहीं खिलते। बिना घी के दीपक नहीं खिलते। सुसंस्कारों के बिना सिद्धियां नहीं मिलती। संस्कारों के बिना आचार-विचार डगमगाते रहेंगे तथा विनम्रता भाव भी नहीं रह पाएगा। घर का दरवाजा भी दुखी हो कर सिमटता चला जायेगा खुशियां नदारद हो जाएगी।

हे भव्य पुरुष - तुम्हें जागना होगा, तपना होगा, जो तपता नहीं वह पकता नहीं। तप तो पकने की प्रयोगशाला है। आम पकता है, तपने के बाद रोटी पकती है, तपने के बाद, सोना चमकता है तपने के बाद और देखिए सूर्य तपता हुआ दुनियां को रोशन करता है। अगर सूर्य देव स्वयं की तपने की फैक्ट्री बन्द कर दे तो मनुष्य जीवन खतरे में हो जाएं। साधना ही तपना है, मन की शुद्धि ही तपना है, व्यवहार को महकदार बनाना तपना है। बुजुर्ग दर बुजुर्ग संस्कारों को पोटली में बांध कर छोड़ गए है, उनको खोलकर जीवन में उतारना ही तपना है। संस्कार न तो आसमान से बरसता है, न धरती से उपजता है। बुजुर्गों की पोटली से व्यवहार का पौधा खिलता है जिसमें मानवता के पुष्प खिलते हैं यह एक ऐसा दीपक है जो दिन-रात चमकता है, कोहीनूर हीरे की तरह।

हे भव्य आत्मा - आप महान है, भव्यता है, लेकिन हमें ऊँचाईयों की ओर जाना है, कठिन रास्ते को सरल बनाने की क्षमता है, विश्वास, ईमानदारी, अनुशासन की डोरी से मन को बांधना है, संस्कार तो खुशियों का लहराता समुद्र है। इसी में से निकलते हैं हीरे-मोती। संस्कार इत्र है - मुस्कान और मदद छिड़कने के। संस्कार ही मन को निर्मल, नियंत्रित और नियमित में बांधे रखता है, ताकि मनुष्य संयमित, सुसंस्कृत रह सके। आइए! बुजुर्गों की विराट वटवृक्ष की छाँव तथा अनुभवों की पाठशाला में दाखिला तो ले ही लीजिए ताकि संस्कारों के बाजार में प्रदर्शनी शो देख सकें, निहार सके, उत्तम संस्कारों को पोटली में बांध कर घर ला सकें, ताकि घर का दरवाजा महकता रहे फूलों के बगीचे की तरह।

''छगन लाल जैन की आकांक्षा है बांटते रहो खुशियां जहां भी हो तुम,
यहीं स्वर्ग मिल जाएगा जीते जी तुमको।''

-छगनलाल जैन
रि. अध्यापक, हरसाना वाले, अलवर

रात्रि भोजन त्याग

उठो उठो तुम उठो जैनियों,
जिन गुण में है संवरना।
नहीं रात्रि भोजन करना।

छोटी लत रात्रि भोजन की,
छोड़ो भूल न करना।
नहीं रात्रि भोजन करना।

दिन में भोजन करो जैनियों,
जिन शिक्षा को ध्याओं।

छोड़ो अनर्थ दण्ड यह हिंसा,
आतम अलख जगाओ।

रखो संयम पार्टी, शादी पर,
यतना से ही चलना।
नहीं रात्रि भोजन करना।

रात्रि भोजन चिड़िया, तोता, मैना
आदि कितने ही नहीं करते।

रात्रि भोजन नहीं करने से,
न जाने कितने जीव हैं बचते।

बचते कितने प्राणी और
जैन धर्म बच जाता
खुद में शान्ति पनप जाती है,
दे दे कर के साता।

है सन्मार्ग, अत्युतम यह तो,
इस पर श्रृद्धा करना।
नहीं रात्रि भोजन करना।

उठो उठो तुम उठो जैन गण,
जिन गुण में है संवरना।

नहीं रात्रि भोजना करना,
नहीं रात्रि भोजना करना।

॥ नमो वीतराणाय ॥

-जे.के. जैन
ई-1/325, चित्रकूट स्कीम, गांधी पथ, जयपुर

॥ श्री महावीर नमः ॥

22वीं पुण्य तिथि पर भावभीनी श्रद्धांजलि

स्व. श्रीमती प्रभा जैन

(स्वर्गवास : 6 दिसम्बर 2001)

छाया मिले आपकी हरदम, सिर पर आपका हाथ हो।
जीवन के हर मोड़ पर सदा आपका आशीर्वाद हो॥

श्रद्धावनत

महावीर प्रसाद जैन *(पति)*

पुत्र-पुत्रवधु :
मृदुल-शलिनी जैन

पौत्र, पौत्री :
मानस, रिद्धिशी जैन

पुत्री-दामाद :
प्रीति-विकास जैन *(कोटा)*

दोहिती :
निशा, महक जैन

निवास :
50-मानस, यादव कॉलोनी, गायत्री नगर, अजमेर रोड, ब्यावर
मो.: 7737620221, 7737720221, 7737820221, 8233741751

(CR D-3061)

अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा

जयपुर – 302015

महासभा आर्थिक चिठ्ठा

31.03.2023 तक

दायित्व	राशि (रु)	संपत्ति	राशि (रु)
समग्र निधि		**निवेश**	
प्रारंभिक शेष	26,90,765.90	बैंक सावधि जमा	49,59,408.95
जोड़ें : आजीवन सदस्यता शुल्क	6,39,301.00		
	33,30,066.90	**अग्रिम और जमा**	
रिजर्व और अधिशेष		टीडीएस	27,854.00
प्रारंभिक शेष	20,42,894.96		
जोड़ें : चालू वर्ष के अधिशेष / (घाटा)	(1,36,098.81)	**नकदी और बैंक बैलेंस**	
	19,06,796.15	इलाहाबाद बैंक आगरा	37,621.06
चिकित्सा कोष		कॉर्पोरेशन बैंक आगरा	30,299.34
प्रारंभिक शेष	1,24,205.00	पंजाब नेशनल बैंक	8,069.70
जोड़ें : चिकित्सा कोष से भुगतान	-	एस बी आई सचिवालय मार्ग	28,445.30
	1,24,205.00	एस बी आई सी स्कीम	4,01,560.22
अन्य कोष एवं निधि		सिंडीकेट बैंक, आगरा	78,075.93
स्वरोजगार कोष	1,00,000.00	रोकड़ शेष	18,905.55
पत्रिका महासभा	19,131.00		
छात्रवृत्ति	65,501.00		
मूकबधिर पशु –पक्षी बचाओं	6,000.00		
केन्द्रांश	5,540.00		
संरक्षक सदस्यता	33,000.00		
कुल	**55,90,240.05**	कुल	**55,90,240.05**

हमारी ऑडिट रिपोर्ट के अनुसार उसी तिथि तक संलग्न

वास्ते अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा

Mahesh Jn

|महासचिव|　　　|अध्यक्ष|

UDIN : 23076903BGWXUS8782

स्थान : जयपुर

तिथि : 27.09.2023

वास्ते गुप्ता गजानन्द एण्ड ऐसोसिएट्स
चार्टर्ड अकाउंटेंट्स
फर्म पंजीकरण कमांक – 07999C

Gupta Gajanand & Associates, CA, JAIPUR, Chartered Accountants

(गजानन्द गुप्ता)
प्रोप्राइटर
सदस्यता संख्या 076903

अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा
जयपुर – 302015

महासभा आय और व्यय खाता

31 मार्च, 2023 को समाप्त वर्ष के लिए

व्यय	राशि (रु)	आय	राशि (रु)
मुद्रण और स्टेशनरी	1,865.00	महासभा के विशेष सहायता	8,400.00
विधवा अनुदान	8,90,200.00	विधवा अनुदान	7,20,502.00
डाक व्यय	1,288.00	एफडीआर पर ब्याज	2,57,030.00
बैंक कमीशन	1,818.81	आयकर रिफ़ंड पर ब्याज	4,484.00
ऑडिट एवं सी ए फीस	8,700.00	बचत बैंक खाता पर ब्याज	16,357.00
चुनाव महासभा का खर्च	8,44,050.00	चुनाव महासभा	6,05,050.00
		वर्ष के दौरान कमी / घाटा	1,36,098.81
कुल	17,47,921.81	कुल	17,47,921.81

हमारी ऑडिट रिपोर्ट के अनुसार उसी तिथि तक संलग्न

वास्ते अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा

वास्ते गुप्ता गजानन्द एण्ड ऐसोसिएट्स
चार्टर्ड अकाउंटेंट्स
फर्म पंजीकरण कमांक – 07999C

Mahesh Jain

|महासचिव| |अध्यक्ष|

Gupta Gajanand & Associates Chartered Accountants JAIPUR

(गजानन्द गुप्ता)
प्रोप्राइटर
सदस्यता संख्या 076903

UDIN : 23076903BGWXUS8782
स्थान : जयपुर
तिथि : 27.09.2023

अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा
जयपुर – 302015

महासभा प्राप्ति और भुगतान खाता

31 मार्च, 2023 को समाप्त वर्ष के लिए

प्राप्तियां	राशि (रु)	भुगतान	राशि (रु)
प्रारंभिक शेष		राजस्व भुगतान वर्ष के दौरान	
इलाहाबाद बैंक आगरा	1,26,244.06	मुद्रण और स्टेशनरी	1,865.00
कॉर्पोरेशन बैंक आगरा	1,21,635.75	विधवा अनुदान	8,90,200.00
पंजाब नेशनल बैंक	12,640.10	डाक व्यय	1,288.00
एस बी आई सचिवालय	23,094.30	बैंक कमीशन	1,818.81
एस बी आई सी स्कीम	2,44,469.22	ऑडिट एवं सी ए फीस	8,700.00
सिंडीकेट बैंक, आगरा	60,453.13	चुनाव महासभा का खर्च	8,44,050.00
रोकड़ शेष	2,018.55		
वर्तमान देनदारियों में वृद्धि	500.00	पुंजीगत भुगतान वर्ष के दौरान	
		टीडीएस	27,854.00
राजस्व प्राप्तियां वर्ष के दौरान		बैंक सावधि जमा	5,39,297.20
महासभा के विशेष सहायता	8,400.00	पत्रिका महासभा	
विधवा अनुदान	7,20,502.00		
चुनाव महासभा	6,05,050.00		
एफडीआर पर ब्याज	2,57,030.00	**समापन शेष**	
बचत बैंक खाता पर ब्याज	16,357.00	इलाहाबाद बैंक आगरा	37,621.06
आयकर रिफ़ंड पर ब्याज	4,484.00	कॉर्पोरेशन बैंक आगरा	30,299.34
		पंजाब नेशनल बैंक	8,069.70
पूंजीगत प्राप्तियां वर्ष के दौरान		एस बी आई सचिवालय	28,445.30
महासभा आजीवन सदस्यता	6,39,301.00	एस बी आई सी स्कीम	4,01,560.22
आयकर रिफ़ंड	66,606.00	सिंडीकेट बैंक, आगरा	78,075.93
पत्रिका महासभा	9,265.00	रोकड़ शेष	18,905.55
कुल	**29,18,050.11**	**कुल**	**29,18,050.11**

हमारी ऑडिट रिर्पोट के अनुसार उसी तिथि तक संलग्न

वास्ते अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा

[महासचिव] [अध्यक्ष]

UDIN :
स्थान : जयपुर
तिथि : 27.09.2023

वास्ते गुप्ता गजानन्द एण्ड ऐसोसिएट्स
चार्टर्ड अकाउंटेंट्स
फर्म पंजीकरण कमांक – 07999C

Gupta Gajanand & Associates Chartered Accountants JAIPUR

(गजानन्द गुप्ता)
प्रोप्राइटर
सदस्यता संख्या 076903

49वीं पुण्यतिथि पर शत्-शत् नमन

स्व. श्री चिम्मनलाल जी जैन

(मुबारिकपुर वाले)

स्वर्गवास : 11.11.1974

आपने अपने अथक परिश्रम, त्याग, धर्मनिष्ठा, कर्तव्यपरायणता व सत्य आदर्शवाद से जो उच्च आदर्श स्थापित किये थे, हम उन्हें सर्वेस्य स्त्रोत मानकर आजीवन निभायेंगे। हम आपके आदर्शवादी जीवन को श्रद्धापूर्वक नमन करते हैं।

श्रद्धावनत

पुत्र-पुत्रवधु :
राजेन्द्र-मिथलेश
बिजेन्द्र-बीना
देवेन्द्र-मन्जू
राजेश-संतोष

भ्राता :
भगवान सहाय जैन
महावीर प्रसाद जैन

पुत्री-दामाद :
श्रीमती ऊषा
आशा-अशोक कुमार

पौत्र-पौत्रवधु :
रूपेश-रजनी, विकास-सुनीता
गौरव-पूजा, मोहित-मनीषा
नितिश-दीपाशा, मनीष-बिन्दिया
गौतम

प्रपौत्र, प्रपौत्री :
सिद्धान्त, अरिहन्त, रिद्धी
सिद्धी, वैष्णवी, यश,
अदिश्री, अद्विक, दिया, निया

पौत्री-पौत्री दामाद :
मुकेश
सोनिया-राहुल, गरिमा-गुंजन
डॉ. निमिषा-डॉ. आधार, नेहा-जितेन्द्र
आयुषी, सानू-रवि

प्रतिष्ठान

- विजय जनरेटर एण्ड इलै. स्टोर (अलवर)
- जैना ट्रेडर्स, विकास इलैक्ट्रिकल्स (अलवर)
- रिषभ जनरेटर, गर्वित फोटो स्टेट (मुबारिकपुर)
- राईड टू राइज फाउन्डेशन, (जयपुर)

46वीं पुण्य तिथि पर भावभीनी श्रद्धांजलि

स्व. श्री लोकेश चन्द जी जैन, *भरतपुर*

(महाप्रयाण : 11 नवम्बर 1977)

46 वर्ष पूर्व हमारे परमपूज्य धर्मपरायण एवं यशस्वी पिताजी
श्री लोकेश चन्द जैन

हमारे लिए अमिट प्रेरणा और महान आदर्श का मार्ग प्रशस्त कर स्वयं सदैव के लिए अमर हो गये। उनकी चिर स्मृति में हम उन्हें श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हैं।

श्रद्धावनत

पत्नी : त्रिलोकमती जैन

पुत्र-पुत्रवधू :

अनिल कुमार जैन (I.R.S.)
(रिटा. प्रिन्सिपल कमिश्नर इन्कमटैक्स)
स्वाति जैन

ई. अरविन्द कुमार जैन (S.E. PWD)
कीर्ति जैन (R.Ac.S.)

पुत्री-दामाद :

मधु जैन - मुकेश जैन
सुधा जैन - नलिन जैन

पौत्र, पौत्री :

ई. दिव्या-दिप्तर, ई. निकेत-सृष्टि,
ई. भुवन जैन (USA), ई. नेहन जैन

निवास : ई-160-161, रामपथ, श्याम नगर, जयपुर-302019
मोबाईल : 9829234340, 9414071750

11वीं पुण्यतिथि पर भावभीनी श्रद्धांजलि

जन्मतिथि :
31-12-1932

स्वर्गवास :
23-11-2012

स्व. श्री अनूप चन्द जी जैन

हम सभी परिजन आपके उच्च विचारों तथा आदर्शों को अपने जीवन में उतारने के लिए सदैव प्रयासरत रहेंगे।

श्रद्धावनत

श्रीमती लक्ष्मी देवी जैन
(धर्मपत्नी)

पुत्र-पुत्रवधू :
शैलेन्द्र जैन-सपना जैन
अनिल जैन-रीता जैन
सुनील जैन-अनीता जैन

पौत्र, पौत्री :
अंकिता-गौरव *(पौत्री-दामाद)*
दक्षिता-मोहित *(पौत्री-दामाद)*
अंशुल जैन-पूजा जैन *(पौत्र-पौत्रवधु)*
अमन जैन-सोनम जैन *(पौत्र-पौत्रवधु)*
आकाश जैन-कनिका जैन *(पौत्र-पौत्रवधु)*
शुभम जैन

भाई :
स्व. श्री निर्मल जैन-विमला जैन
स्व. श्री जगदीश जैन-स्व. प्रमिला जैन
स्व. श्री प्रमोद जैन-मधु जैन
श्री विनोद जैन-ममता जैन

बहन-बहनोई :
स्व. शान्ति जैन-ओम प्रकाश जैन

दामाद-पुत्री:
राकेश जैन-रेनू जैन
राजीव जैन-अंजू जैन

दोहती, दोहते :
रागिनी-रितेश
अंकेश जैन-प्रतीक्षा जैन
रचित जैन, दृष्टि जैन

परपौत्री :
रूही जैन, अंशिका जैन

फर्म : **डेल्टा कम्प्यूटर्स,** संजय पैलेस, आगरा
निवास स्थान :
सी-3, केदार नगर, शाहगंज, आगरा (उ.प्र.), मो.: 9837020651, 9837890450

पत्रिका विज्ञापन सहयोग राशि

** संशोधित दरें दिनांक 25.01.2022 से लागू*

	वार्षिक	मासिक
कवर पृष्ठ अंतिम (मल्टीकलर)	31,000/-	
कवर पृष्ठ द्वितीय (मल्टीकलर)	25,000/-	
कवर पृष्ठ तृतीय (मल्टीकलर)	25,000/-	
कलर पृष्ठ (मल्टीकलर)	21,000/-	3,000/-
पुण्य स्मृति आधा पृष्ठ श्वेत श्याम	10,000/-	1,000/-
पुण्य स्मृति पूरा पृष्ठ श्वेत श्याम	15,000/-	1,500/-

पत्रिका सदस्यता

पत्रिका वार्षिक शुल्क	50/-	5/-
पत्रिका आजीवन सदस्य	500/-	
पत्रिका संरक्षक सदस्य	11,000/-	
पत्रिका हितैशी सदस्य	5100/-	

सूचना

(अ) रु. 500/- से कम के आर्थिक सहयोग राशि वालों के नाम पत्रिका में प्रकाशित नहीं किये जायेंगे।

(ब) जो सदस्य अपनी पत्रिका कोरियर द्वारा प्राप्त करना चाहते हैं वह रु. 50/- प्रति माह के हिसाब से एक वर्ष का शुल्क रु. 600/- श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका को भेजें।

- *पत्रिका हेतु प्रकाशनार्थ सामग्री पत्रिका संयोजक/सम्पादक के पास ही प्रेषित करें, जो प्रत्येक माह की 15 तारीख तक प्राप्त होनी चाहिये।*
- *पत्रिका हेतु सदस्यता शुल्क/विशेष सहायता संयोजक के पास प्रेषित करें।*
- *पत्रिका में स्थान उपलब्ध होने पर ही विज्ञापन का प्रकाशन किया जायेगा।*
- *गत वर्ष के रंगीन विज्ञापनदाताओं की बकाया विज्ञापन सहयोग राशि शीघ्र संयोजक के पास भिजवाने का कष्ट करें।*

आप पत्रिका की भुगतान राशि 'श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका' के नाम से या ऑनलाईन खाते में भी भेज सकते हैं, विवरण निम्न है :-

"SHRI PALLIWAL JAIN PATRIKA"
Bank Name : **BANK OF BARODA** • Branch : **DURGAPURA, JAIPUR**
A/c No.: **38260100005783** • IFSC Code : **BARB0DURJAI**

पत्रिका राशि ऑनलाईन जमा कराने के बाद संयोजक को सूचना देवें एवं ट्रांसफर राशि का स्क्रीन शॉट भी भेजें, इसके अभाव में जमा राशि का समायोजन किया जाना संभव नहीं होगा।

चन्द्रशेखर जैन, संयोजक पत्रिका
मो.: 9829134926

मान्यवर,

सभी साधर्मी बन्धुओं को सुचित किया जाता है कि अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा को विधवा सहायता एवं अन्य सहयोग प्रदान करने हेतु राशि चैक, नकद या ऑनलाईन महासभा के खाते में जमा करवाई जा सकती है, जिसका विवरण निम्न है :-

"AKHIL BHARTIYA PALLIWAL JAIN MAHASABHA"
Bank Name : **STATE BANK OF INDIA** • Branch : **C-SCHEME, JAIPUR**
A/c No.: **51003656062** • IFSC Code : **SBIN0031361**

राशि जमा कराने के पश्चात अर्थमंत्री को अवश्य सूचित करें, जिससे जमा की रसीद प्रेषित की जा सके।

भागचन्द जैन, अर्थमंत्री महासभा
मो.: 9828910628

सूचना

1. पत्रिका में प्रकाशित वर/वधू की तलाश के अंतर्गत विवरण की सत्यता से सम्पादक अथवा पत्रिका का किसी भी प्रकार का दायित्व नहीं हैं। वर/वधू दोनों पक्ष पूर्ण जानकारी अपने स्तर से करने के बाद ही संबंध स्थापित करें।
2. पात्रों के विवरण में आयु के स्थान पर जन्मतिथि तथा आय चार/पांच अंको में, के स्थान पर वास्तविक आय लिखें।

नोट : प्रकाशन योग्य सामग्री एवं संबंध होने की सूचना पत्रिका संयोजक को प्रषित करें जिससे आगामी अंक में विज्ञापन का प्रकाशन किया जाये या न किया जाये।

वर की तलाश

★ **Jigyasa Jain** D/o Sh. Sumat Paraksh Jain, DoB 30.04.1997 (at 6:08 PM, Bharatpur), Height- 5Ft., Fair Complexion, Education- MCA (RTU), Gotra : Self- Rajoriya, Mama- Kotiya, Contact : Seth House, Sainath Khidkiya, Karauli, Mob.: 9413886872 *(Sep.)*

★ **Khushboo Jain** D/o Sh. Nalin Kumar Jain, DoB 21.01.1996 (at 12:07 pm, Jaipur), Height 5'-3", Education- B.Tech (CS), Gotra : Salf- Ladodiya, Mama- Maimuda, Contact : 425, Devi Nagar, New Sanganer Road, Sodala, Jaipur-302019, Mob.: 9460765484, 7976691211, 9460434712 *(Sep.)*

★ **Priyanka Jain** (Manglik) (Divorced) D/o Sh. Saral Kumar Jain, DoB 06.08.1985 (at Aligarh), Height 5'-2", Fair Colour, Education- B.A., Gotra : Salf- Jewaiya, Mama- Sankhiya, Contact : Jain Street, Chippite, Aligarh, Mob.: 6395288036, 9058606560 *(Sep.)*

★ **Rashi Jain** (Manglik) D/o Sh. Anil Kumar Jain, DoB 14.01.1996 (at 7:38 pm, Agra), Height 5'-3", Education- B.Arch., Working at Gurgaon as Architect, Gotra : Salf- Baroliya, Mama- Chaurbambar, Contact : B-677, Kamla Nagar, Agra (U.P.), Mob.: 8218278127, Whatsapp : 7060066267 *(Nov.)*

★ **Soniya Jain** (Divorcee) D/o Late Sh. Pawan Kumar Jain, DOB 02.11.1990 (at 08:20 AM, Mandawar, Dausa), Height- 5'-3", Education- BPED, MA (Sanskrit, Political Science), Job- Govt. Physical Teacher in Alwar, Preference- Only Alwar City, Gotra : Self- Bahttariya, Mama- Digamber Jain, Contact : Smt. Sushama Jain, HB/137, Bajrang Vihar Colony, Mahwa, Dausa, Mob.: 9680539915, 8824995555 *(Nov.)*

★ **Ayushi Jain** D/o Sh. Vinod Kumar Jain, DoB 19.01.1997 (at 6:15 am, Agra), Height- 5'-2", Fair Colour, Education- B.Tech (Electronics & Communication), Occupation- UI/UX Designer at Mindinventory, Gotra : Self- Nageshwariya, Mama- Saigarwasiya, Contact : F-302, Satkar Avenue, Near Nana Chiloda, Naroda Railway Crossing, Ahmedabad, Mob.: 9998457035, 9313177591 *(Nov.)*

★ **Neha Jain** (Manglik) D/o Sh. Manoj Kumar Jain, BoD 24.05.1994 (at 06:55 AM, Laxmangarh, Alwar), Height- 5 ft., Fair Complexion, Education- B.Tech (CSE), Jyoti Vidyapeeth Womens University, Jaipur, Profession- Sr. iOS Developer at TIAA, Income 23.50 LPA, Gotra : Self- Chaurbambar, Mama- Athvarsiya, Contact : Near Jain Temple, Main Market Road, Laxmangarh, Alwar, Mob.: 9414906441 *(Nov.)*

★ **Ankita Jain** D/o Sh. Chandra Shekhar Jain, DoB 08.08.1995 (at 11:45 AM, Jaipur), Height- 5'-3", Education- B.Tech (E.C.), Occupation- UDC in ESIC (Ministry of labor and Employment Central Govt.) Vadodara (Gujarat), Gotra : Self- Baderiya, Mama- Mahrod, Contact : 78-A, Madhav Nagar, Maharani Farm, Durgapura, Jaipur-302018, Mob.: 9414752966 *(Nov.)*

वधू की तलाश

कृपया दहेज लोभी पत्रिका में प्रकाशनार्थ विज्ञापन न भेजें

★ **सागर जैन** पुत्र श्री आदिराज जैन, जन्मतिथि 14.01.1992 (रात्रि 10:59), कद 5'-8'', शिक्षा-ग्रेजुएट (बी.ए.), व्यवसाय- स्वयं का बिजनेस, गोत्र : स्वयं- कालोनिया, मामा- गर्ग, सम्पर्क : 9/6 ए, जैन मौहल्ला, मोदी खाना, अलीगढ़-202001 (उत्तर प्रदेश), मो.9873297097 *(अगस्त)*

★ **आकाश जैन** पुत्र श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, जन्मतिथि 13.10.1994, कद 5'-9'', शिक्षा- बी.टेक. मैकेनिकल, जॉब- सॉफ्टवेयर डवलपर (उत्कर्ष क्लासेज), पैकेज 5 लाख प्रति वर्ष, गोत्र : स्वयं- चौडबम्वाड, मामा- पावटिया, सम्पर्क : 9413066041, 6375638044 *(अगस्त)*

★ **रजत जैन** पुत्र श्री प्रकाश चन्द जैन, जन्मतिथि 22.02.1996 (प्रात: 11:35 बजे), कद 5'-5'', शिक्षा- बी.टेक., जॉब- आई.टी. कम्पनी, वेतन- 60 हजार प्रति

माह, गोत्र : स्वयं- बडवासिया, मामा- महला, सम्पर्क : 241, शान्ति कुंज, अलवर, मो.: 7410815584 *(अगस्त)*

- ★ **ऋषभ जैन** पुत्र श्री प्रदीप कुमार जैन, जन्मतिथि 13.05.1995 (प्रात: 06:00 बजे), कद 5'-5'', शिक्षा- बी.कॉम., पीजीडीएम फाइनेंस, जॉब- एरिया क्रेडिट मैनेजर लार्सन एंड टुब्रो फाइनेंस जोधपुर ब्रांच, आय- 10 लाख वार्षिक, गोत्र : स्वयं- जनूथरिया, मामा- चौरबम्बार, सम्पर्क : प्लाट नं. 9, भजन नगर, अजमेर रोड, ब्यावर, मो.: 9460312001, 9414866607 *(अगस्त)*
- ★ **शान्तनु जैन** पुत्र श्री नरेश कुमार जैन, जन्मतिथि- 10.01.1998 (प्रात: 06:30 बजे), कद 5'-10'', शिक्षा- बी.ई. (कम्प्यूटर साइंस), व्यवसाय- सॉफ्टवेयर इंजीनियर, मेजिक फिन सर्व नोएडा उ.प्र., आय- 10 लाख रु. वार्षिक, गौत्र : स्वयं- टपरिया, मामा- पाण्डे, सम्पर्क : 201, अमित अपार्टमेण्ट, 1/1 पारसी मोहल्ला, छावनी, इन्दौर-452001 (म.प्र.), मो.: 98264 88688 (जयसेन जैन), 98269 88688 (नरेश जैन) *(सितम्बर)*
- ★ **आयुष जैन** (तलाकशुदा) पुत्र श्री योगेश चन्द जैन, जन्मतिथि 18.02.1987 (प्रात: 5:30 बजे, अलवर), लम्बाई 5 फुट 6 इंच, शिक्षा एम.ए., बी.एड, डी.फार्मा, व्यावसाय- स्वयं का बिजनेस, आय 4 लाख रु. वार्षिक, गोत्र : स्वयं- बयानिया, मामा- माईमुडा, सम्पर्क : सी-326 सूर्य नगर अलवर राजस्थान, मोबाइल 7891899868 *(नवम्बर)*
- ★ **Himanshu Jain** S/o Sh. S.K. Jain, DoB 24.07.1998, Height 5'-10", Education- B.Tech., Working in MNC, Noida, Gotra : Self- Chaudhary, Mama- Athwarsia, Income- 11 LPA, Contact : 91/16, Patel Marg, Mansarovar, Jaipur, Mob.: 9079910858, Email : Jain_sk15@ymail.com *(Sep.)*
- ★ **Sagar Jain**, Age- 29 Years, Education- B.Tech. from NIT Jalandhar, MBA (Marketing & Finance) from MDI Gurgaon, Occupation- Accounts Manager in Microsoft, Package- 38 LPA, Gotra : Self- Chorambar, Mama- Kotia, Contact : Umesh Jain, MBS Nagar, Kota, Mob.: 9509991649, 8209764288 *(Sep.)*
- ★ **Shubham Jain** S/o Sh. Sumat Kumar Jain, DoB 23.11.1994 (at 1:45 AM, Bharatpur), Height- 5'-6", Fair Complexion, Education- B.Tech. (Chemical), Occupation- Senior Engineer in Nuberg Engg. Ltd. Noida (UP), Package- 10.5 LPA, Gotra : Self- Kotiya, Mama- Pawatiya, Contact : 604, Orient Residency, Krishna Sagar, Mansarovar, Jaipur, Mob.: 9460738602 *(Sep.)*
- ★ **Palak Jain** S/o Sh. Ashok Kumar Jain, DoB 19.11.1991 (at 2:35 PM), Height- 5'-7", Education- B.Com, MBA, Service- Process Analyst in Tata Consaltancy Service, Gurgaon, Package- 5 LPA, Gotra : Self- Baderia, Mama- Barolia, Contact : House No. 1724, Sector 7, Avas Vikas Colony, Bodla, Agra-282007, Mob.: 9319179796, 9758010189 *(Sep.)*
- ★ **Pawan Kumar Jain** S/o Sh. K.K. Jain, DoB 19.09.1994, Height- 5'-7", Education- Chartered Accountant, Occupation- Deputy Manager in ICICI Bank Jaipur_RO, Package- 10.35 LPA, Gotra : Self- Daduriya, Mama- Nageshriya, Contact : Plot No. 14, Sky House, Dronpuri, Vaishali Nagar West, Jaipur, Mob.: 9461588831, 9024272579 *(Sep.)*
- ★ **Shubham Jain** S/o Sh. Rajesh Kumar Jain, DoB 29.06.1994 (at 9:20 am, Jaipur), Height- 5'-6", Education- B.E. (MBM Engineering College), MS (IIT Guwahati), Gotra : Self- Salavadia, Mama- Barolia, Job- ESG Analyst, Goldman Sachs, Bangalore, Package- 25 LPA, Contact : 202-A, Jagdamba Nagar-A, Heerapura, Jaipur, Mob.: 9413349336, 9460054718 *(Sep.)*
- ★ **Aditya Jain** S/o Sh. Uttam Jain, DoB 12.10.1990 (at 11:20 pm, Alwar), Height 5'-6", Education- M.Tech. (BITS Pilani), Job- Senior Software Engineer, WatchGuard Technologies, Noida, Package- 26 LPA, Gotra : Self- Kashmeria, Mama- Choudhari, Contact : Janakpuri Second, Imli Phatak, Jaipur, Mob.: 9414405532 *(Sep.)*
- ★ **Pawan Jain** S/o Sh. Keshav Kumar Jain, DoB 13.07.1994 (at 04:40 AM, Kolkata), Height- 5'-4", Education- B.Tech. (AM), Occupation- Sr. Software Engineer in Tech Mahindra, Pune, Package- 11 LPA, Gotra : Self- Bahatariya, Mama- Lohkaroriya, Contact : 216, Teeja Nagar, Sirsi Road, Panchyawala, Jaipur-302034, Mob.: 9038471750, 9314653717 *(Sep.)*
- ★ **Sahil Jain** S/o Sh. Sudhir Kumar Jain, DoB 06.04.1997 (at Mandawar), Education- MJMC and MHRM, Occupation- Work in Genpact, Jaipur, Gotra : Self- Kotia, Mama- Ambiya, Contact : Jain Vastra Bhandar, Mandawar, Mob.: 9413417843 *(Sep.)*
- ★ **Shubham Jain** S/o Sh. Dinesh Chand Jain, DoB 28.01.1996 (at 10:15 am), Education- B.Tech. (Computer Science), Occupation- Working as Assistant Manager in RRB (Aryavart Bank), Salary- 65,000/- per month + perks, Gotra : Self- Chandpuriya, Mama- Kotiya, Contact : Madia

Katra, Agra, Mob.: 9412457856 *(Oct.)*

★ **Mayank Jain** S/o Sh. Dharmendra Jain, DoB 13.12.1995 (at 4:23 pm, Agra), Height- 5'11", Education- B.Tech (CS), Occupation- Service (A.G.M. Digital Marketing & Operation), Noida, Package- 22 LPA, Gotra : Self- Chandpuriya, Mama- GindodaBux, Contact : Agra, Mob.: 975601007, 9456816565 *(Oct.)*

★ **Ankit Jain** (Ansik Manglik) S/o Sh. Anoop Chand Jain, DoB 23.12.1993 (at 10:00 am, Hindaun City), Height- 5'-9", Education - Persuing CA (in CA Final) 2nd Group Cleared, B.Com., Job- Working as Management Trainee "Genpact" (Westpac Australian Bank) Jaipur, Package- Rs. 7.50 LPA, Gotra : Self- Chorbambar, Mama- Chandpuriya, Contact : Sh. Anoop Chand Jain C/o Vardhman Trading Company, New Mandi, Hindaun City, Plot No. 329, Patrakar Colony, Mansarovar, Jaipur, Mob.: 9413817764 *(Oct.)*

★ **CA Saurabh Jain** S/o Sh. Vijay Kumar Jain (Baragma Wala), DoB 30.10.1993 (at 6:30 PM, Jaipur), Height- 5'-6", Education- Chartered Accountant (2017), B.Com, Job- Senior Manager - Credit Saison, Mumbai (Japanese MNC), Gotra : Self- Bhoradangiya, Mama- Bhetariya, Contact : P.No. 38, Flat No. G1, ISD Residency 2, Dr. Rajendra Prasad Nagar, Jaipur, Mob.: 9251565282, 8955322167 *(Oct.)*

★ **Atul Jain** S/o Sh. Sanjeev Kumar Jain, DoB 24.07.1995 (at 1:00 am, Kherli), Height 5'-7", Education- B.Sc., MBA, Occupation- Working in Sun Pharma, Package- 11 LPA, Gotra : Self- Bayaniya, Mama- Chorbambar, Contact : 87, Pratap Nagar, Kalwar Road, Jhotwara, Jaipur, Mob.: 9414446323, 8949352686 *(Oct.)*

★ **Naman Jain** S/o Sh. Manoj Kumar Jain, DoB 16.10.1996 (at 7:10 am, Jaipur), Height- 5'-9", Education- B.Tech from IIT Gandhi Nagar (Gujarat), Occupation- Data Scientist Engineer in UP42 GmbH at Barlin, Germany, Gotra : Self- Bhadkoliya, Mama- Athvarsiya, Contact : 183, Mahaveer Nagar-II, Maharani Farm, Jaipur, Mob.: 8696949153, 8094477631 *(Oct.)*

★ **Alok Jain** S/o Sh. Vinod Prakash Jain, DoB 30.06.1983, Height- 5'-9", Education- B.Com., Occupation- Handicraft Business, Income- 20 LPA, Gotra : Self- Chaudhaey, Mama- Chorbambar, Contact : E-617, Vaishali Nagar, Jaipur, Mob.: 9461778345 *(Oct.)*

★ **Apurv Jain** S/o Sh. Dharm Chand Jain, DoB 05.06.1996 (at Hindaun), Height- 5'-10", Education- P.G. from Raj. Uni., D.Led., Librarian from VMOU, RSCIT, Occupation- Executive in Digamber Capfin Ltd., Gotra : Self- Bahatriya, Mama- Kotia, Contact : Behind Jain Mandir, New Jain Colony, Vardhman Nagar, Hindaun City., Dist. Karauli, Mob.: 9460442094, 9460758378, 9929835225 (Oct.)

★ **Naman Jain** S/o Sh. Rajendra Kumar Jain, DoB 01.12.1995 (at 3:48 AM, Agra), Height- 5'-6", Education- BBA, LLB (5 Year Integrated Course), Symbiosis Law School, Noida, Profession- Manager Legal at HDFC Bank Ltd., Income- 16 LPA, Gotra : Self- Mastdangya-Chaudhary, Mama- Baroliya, Contact : 32 Phase-1, Maruti Estate, Agra-282010, Mob.: 8979274140, 9027060010 *(Oct.)*

★ **Rahul Jain** S/o Sh. Arvind Jain, DoB 27.02.1993 (at 2:45 am, Ajmer), Height- 5'-9", Education- B.Tech., Job in S.K. Phoenix, Patiala (HOD Mathematics), Income- 12 LPA, Gotra : Self- Mehatiya, Mama- Gangeriwal, Contact : 1st-A, UIT Colony, Opp. Chandra Stores, Pal Beechla, Ajmer, Mob.: 6376029451, 9414277046, 989140122 *(Oct.)*

★ **Shubham Jain** S/o Late Sh. Rajesh Jain, DoB 13.07.1994 (at 1:40 am, Beawar), Height- 5'-11", Education-MBA (Marketing & Finance), Occupation- Channel Relationship Manager (Unit Sale) UltraTech Cement, Barmer, Package- 11 LPA + 2.5 Lacs incentives, Gotra : Self- Januthrya, Mama- Badwasye, Contact : Smt. Babita Jain, H.No. 6, New Agrasen Colony, Delwara Road, Beawar-305901, Mob.:9529397529, 7976359003 *(Oct.)*

★ **Divesh Jain** S/o Sh. Gyan Chand Jain, DoB 29.06.1994 (at 06:15 pm, New Delhi), Height- 5'-3", Gotra : Mimunda, Education- Post Graduate, Employed in SI_UK - Gurugram, Income- 7-10 LPA, Contact : Rze-58, Raj Nagar Part-2, Dada Dev Road, Palam, New Delhi-110077, Mob.: 9718869534 *(Oct.)*

★ **Shreyansh Jain** S/o Sh. Anurag Jain, DoB 02.04.1998 (at 08:48 am, Firozabad), Height- 5'-8", Education- B.Tech (Computer Science), Occupation- Business (Raigarh, Chhatisgarh), Gotra : Self-Salavadiya, Mama- Baribar, Contact : Bhatti Wali Gali, Gali No. 07, Durga Nagar, Firozabad-283203, Mob.: 7017475621, 8279935069 *(Oct.)*

★ **Shubham Jain** S/o Sh. Sanjay Kumar Jain, DoB 29.04.1994, Height- 5'-6", Education- M.Sc. (Mathematics), Computer Skills- ADCA, CCC,

'O' Level, CTT & (Java Programming Language), Occupation- Working with HDB Financial Services as a Branch Manager, Mathura, Gotra : Thakuriya, Contact : 256, Bari Chappetti, Near Jain Mandir, Firozbad, Mob.: 8057556239, 8445255409 *(Oct.)*

★ **Shubham Jain** S/o Sh. Ajay Kumar Jain, DoB 18.08.1993 (at 11:15 AM, Agra), Height- 5'-11", Education- B.Tech (Mechanical), Job- In Indian Railway as Senior Assistant Loco Pilot in Vasai, Mumbai (Maharashtra), Annual Package- 9.0 Lacks, Gotra : Self- Baderiya, Mama-Salavadiya, Contact : Sh. Ajay Kumar Jain (Agra university) H.No. 377, Sector-7, Awas Vikas Colony, Sikandar, Agra, Mob.: 9358464211, 7983134527, 9413157047 *(Nov.)*

★ **Anant Kumar Jain** S/o Sh. Ashok Kumar Jain, DoB 19.07.1998, Height 5'-5", Education- B.A., Occupation- Business, Gotra : Self- Salavadiya, Mama- Bhanwariya, Contact : Nahar Road, Opp. Vikash Marriage Home, Gangapur City (Sawai Madhopur), Mob.: 9414551964, 8078695264 *(Nov.)*

★ **Anshul Jain** S/o Sh. R.K. Jain (SBI), DoB 13.7.1992 at Agra, Height 6 feets, Education- MBA, PG (Business Analysis & IB), Serving as Software Engineer in Markle LLC USA at Mumbai (now WFH), Earnings 10 LPA, Gotra : Self- Kotiya, Mama-Barwasia, Contact : C-13, Prateek Enclave, Kamla Nagar, Agra, Mob.: 9917474357, Email : rajendr1959@gmail.com *(Nov.)*

★ **Rishabh Jain** S/o Sh. Rakesh Jain Bajaj, DoB 21.01.1995 (at 4:31 am, Agra), Height 5'-5", Education- B.Tech & M.Tech in Chemical Engineering (IIT Jodhpur), Working in Nuberg Engineering Ltd., Noida, Gotra : Self- Ladhodia, Mama- Baderia, Contact : L-16, Prateek Enclave, Kamla Nagar, Agra-282005, Mob.: 9412671191, 9045856032 *(Nov.)*

★ **Neeraj Jain** S/o Late Sh. Jagdish Chandra Jain, DoB 15.02.1993 (at 04:08 PM, Gangapur City), Height- 5'-10", Education- M.Com., Occupation- Branch Sales Manager at Fullerton Home Finance (Jaipur), Package- 8 LPA, Gotra : Self- Nagesuria, Mother- Rajoria, Contact : Flat G-1, Keshav Vihar, Ridhi Shidhi, Jaipur, Mob.: 9983671716 (Mother), 9460124713 (Mosaji) *(Nov.)*

★ **Mayank Jain** S/o Sh. Virendra Kumar Jain, DoB 22.09.1995 (at 06:03 pm, Agra), Height- 5'-10", Education- B.Tech (Electronics) Noida, Occupation- Business of Printing & Packaging with two units in Mathura, Gotra : Self- Saingarwasi, Mama- Mahila, Contact : 9837022098, 9837950559 *(Nov.)*

★ **Archit Jain** S/o Sh. Rajesh Jain, DoB 09.07.1995 (at Jaipur), Height- 6 feet, Education- MBA, Diploma in Animation, VFX and Graphic Design from Maac Jaipur, Occupation- Own Business, Gotra : Self- Ladoriya, Mama- Chandpuriya, Contect : 962, Kissan Marg, Barkat Nager, Tonk Phatak, Jaipur, Mob.: 931537837 *(Nov.)*

★ **Rahul Jain** S/o Sh. Piyush Jain, DoB 12.09.1997 (at 9:00 am, Jaipur), Height- 5'-10", Education- B.Com., Job- in ICICI Bank D.M Jaipur, Gotra : Self- Janutharia, Mama- Baderiya, Contact : 7878021621, 8385888763 *(Nov.)*

★ **Shubham K. Jain** S/o Sh. Sunil Kumar Jain, DoB 28.10.1993 (at 11:50 pm, Agra), Height- 5'-8", Education- B.Tech., Occupation- Senior Software Engineer, Income- 35 LPA, Gotra : Self- Salawadiya, Mama- Chandpuriya, Contact : C-3, Kedar Nagar. Shahganj, Agra, Mob.: 9837020651, 8077417805, Email : delta_agra@rediffmail.com *(Nov.)*

★ **Anshul Jain** S/o Sh. Ajay Kumar Jain, DoB 04.09.1994 (at 10:20 pm, Agra), Height- 5'-7", Education- MBA, M.Com., Job- Senior Specialist in FP&A (Financial Planning & Analysis), Oceaneering International Ltd., Chandigarh (Work from home), Package 10 LPA, Gotra : Self- Kher, Mama- Baderiya, Contact : 9412725579, 9286207918, Email : jainanshul.sept@gmail.com *(Nov.)*

★ **Vibhor Jain** S/o Late Sh. Sunil Kumar Jain, DoB 12.04.1992 (at 05:55 am, Jaipur), Height- 5'-10", Education- M.Com., Company Secretary, U.G.C. Net, Occupation- Manager Accounts, Food Corporation of India, Package 12 LPA, Gotra : Self- Belanvasia, Mama- Kotia, Contact : Smt. Rachna Jain, 104, Vardhman Nagar (B), Ajmer Road, Jaipur, Mob.: 9414681290 *(Nov.)*

★ **Neeraj Jain** S/o Sh. Ashok Kumar Jain, DoB 04.04.1992 (at 07:00 am), Height- 5'-5", Education- B.C.A., M.B.A., Occupation- Backup Branck Manager in HDFC Bank (Shamsbad Agra), Gotra : Self- Chorambar, Mama- Kasmiriya, Contact : 8445922449 *(Nov.)*

★ **Deepanshu Jain** S/o Sh. Virendra Kumar Jain, DoB 14.08.1995 (at 01:35 am, Alwar), Height- 5'-6", Fair Complexion, Education- B.Tech.

(Electrical), Occupation- Associate, State Bank of India, Gotra : Self- Maimuda, Mama- Gindodiya, Contact : C-118, Malviya Nagar, Alwar, Mob.: 8233183037 *(Nov.)*

★ **Shreyans Jain** S/o Sh. Bharat Jain (Advocate), DoB 02.03.1993, Height- 171 cm, Education- B.Tech, IIT Mumbai, Working at Tower Research, London, Annual Income above 4 CR, Contact : Flat No. A 201, The Crest (FS Realty), Airport Enclave Scheme, Near Durgapura, Tonk Road, Jaipur, Whatsapp B&P at 9414490586, Email : bjain1201@gmail.com *(Nov.)*

★ **Yash Kumar Jain** S/o Sh. Mukesh Chand Jain, DoB 08.07.1998 (at 3:00 PM, Mahwa, Dausa), Height- 5'-10", Education- B.Tech (Mechanical), Occupation- Engineer, Gravita India Ltd., Jaipur, Annual Income- 5 LPA, Gotra : Self- Maimuda, Mama- Lhokrodiya, Contact : 49, Brijraj Enclave, Gali No. 5, Sirsi Road, Vaishali Nagar, Jaipur, Mob.: 9530025396 *(Nov.)*

★ **Nishant Jain** (Manglik) S/o Sh. Navin Chandra Jain, DoB 27.08.1991 (at 11:10 am, Ajmer), Height- 5'-11", Fair Complexion, Education- B.Com, B.Ed., M.Com (Accounting), M.Com (Economic), MBA (Financial Management), RET Qualified (Enterance Test for Ph.d), Occupation- Currently Working as Accountant in Pragya Group of Institute, Bijainagar (Ajmer), Gotra : Self- Bhadkolia, Mama- Pavatiya, Contact : 238, Hari Bhau Upadhayay Nagar (Extn.), Pushkar Road, Ajmer-305001, Mob.: 9799191110, 7727949800 *(Nov.)*

★ **Prince Jain** S/o Sh. Pankaj Kapoor Jain, DoB 27.09.1996 (at Alwar), Height- 5'-6", Fair Complexion, Education- B.Tech (Mechanical Engineering), M.Tech. (Metallurgical and Materials Engineering, IIT Jodhpur), Occupation- Mechanical Design Engineer at Arup, Mumbai, Gotra : Self- Athvarsiya, Mama- Salavadiya, Contact : 392, Scheme No. 10 A, Vivek Vihar, Alwar-301001, Mob.: 9414419022, 9358331675 *(Nov.)*

★ **Arihant Jain** (Manglik) S/o Sh. Satyendra Kumar Jain, DoB 01.04.1995 (at 06:30 PM, Agra), Height- 5'-8", Education- PGDCSA, MCA (Pursuing), Profession- Software Engineer at Mercer, Package- 13.76 LPA, Gotra : Self- Chaurbambar, Mama- Kotiya, Contact : H.No. 9, Vishv Karma Vatika, Shahganj Road, Bodla, Agra-282007 (UP), Mob.: 7520615933, 9410857876, 8193034401, Email : jarihant7060@gmail.com *(Nov.)*

★ **Rishabh Jain** S/o Sh. Jitendra Kumar Jain, DoB 21.05.1997 (at 5:00 pm, Agra), Height- 5'-8", Fair Complexion, Education- B.Com. (Hons.) IMS Unison University, Dehradun, Occupation- Partner in Business Firm Dee Jay Steels (Auth. Dealer- Tata Shaktee and Kosh, Steel Authority of India Ltd.), Gotra : Self- Chaurambaar, Mama- Vedere, Contact : D- 84 Pratap Nagar, Agra, Mob.: 8958511999, 9927844665, Email : deejaysteels@gmail.com *(Nov.)*

★ **Utkarsh Jain** S/o Sh. Girish Jain, DoB 14.11.1996 (at 11:27 AM, Jaipur), Height- 5-'11", Fair Complexion, Education- M.Tech. (Cyber Security) Sardar Patel University of Police, Security and Criminal Justice, Occupation- Forensic Scientific Assistant (State Forensic Science Laboratory, Jaipur), Gotra : Self- Athvarsia, Mama- Salavadia, Contact : 18, Shree Ram Vihar Vistar, Manyawas, Mansarovar, Jaipur, Mob.: 9887147520 *(Nov.)*

* * * *

शोक संवेदना

श्री केवलचंद जी जैन (पुत्र स्व. श्री अमीर चन्द जी जैन) एवं (महासभा के संयुक्त मंत्री श्री राहुल जैन के पिताजी), निवासी 6 ईश्वर नगर, पश्चिमपुरी, आगरा का दिनांक 14.11.2023 को आकस्मिक देहावसान हो गया है। आप धार्मिक, सामाजिक व सरल स्वभाव के व्यक्ति थे। अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा वीर प्रभु से दिवंगत आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान देने की प्रार्थना करते हुए शोक संवेदना प्रकट करती है।

★ **शीशा कमजोर बहुत होता है मगर सच दिखाने से घबराता नहीं है।**

★ **यह मत सोचिए कि समाज ने आपके लिए क्या किया? बल्कि आप यह सोचिए आपने समाज के लिए क्या किया?**

★ **लम्बी छलांगों से कहीं बेहतर है निरंतर कदम, जो एक दिन आपको मंजिल तक ले जाएगा।**

★ **जो लोग सफर में अकेले चलने का हौसला रखते हैं एक दिन काफिला उनके पीछे चलता है।**

प्रथम पुण्यतिथि पर भावभीनी श्रद्धांजलि

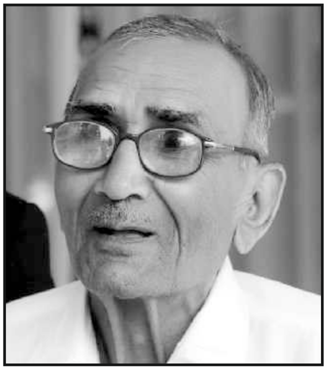

स्व. श्री महावीर प्रसाद जी जैन (सहाड़ी वाले)

स्वर्गवास : 30.11.2022

आपका सद्व्यवहार, सेवा भावना, धर्म के प्रति आस्था एवं प्रेरणादायक चरित्र हमारी स्मृति में सदा रहेगा। हम सभी आपको शत्-शत् नमन करते हुए अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

श्रद्धावनत

पुत्र-पुत्रवधु :
रविन्द्र कुमार जैन-विमला जैन
महेन्द्र कुमार जैन-सीमा जैन
देवेन्द्र कुमार जैन-निशा जैन

पौत्र-पौत्रवधु :
चंचल कुमार जैन-पूजा जैन
नीरज कुमार जैन-उर्वशी जैन
निखिल जैन

भाई-भाभी :
सुरेश चन्द जैन-शारदा जैन

पुत्री-दामाद :
रेखा जैन-सतीश चन्द जैन

पौत्री-पौत्री दामाद :
पूजा जैन-डॉ. विवेक जैन

निवास :
ई-14, श्रीराम विहार कॉलोनी
बजरी मण्डी रोड, वैशाली नगर, जयपुर
मो.: 9982854504, 9461408912

(CR D-3060)

नवम् पुण्यतिथि पर शत्-शत् नमन

"दिन बीते, महीने बीते, बीत गये नौ वर्ष
कोई ऐसा पल नहीं था जब हमें न आया हो आपका ख्याल"

स्व. श्री जगदीश चन्द जैन एवं स्व. श्रीमती प्रमिला जैन

(स्वर्गवास : 16 नवम्बर 2014)

आपके विचार एवं आपके द्वारा दिए गए संस्कारों से ओत-प्रोत इस जीवन में आपकी स्मृति सदैव हृदय में अंकित रहेगी। आपकी 9वीं पुण्यतिथि पर हम सभी परिवारी जन अश्रुपूरित नेत्रों से श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।
आपका स्नेह, सद्व्यवहार, सेवा भावना एवं धर्मपरायणता हमारा सदैव मार्गदर्शन करता रहेगा।

श्रद्धावनत

पुत्र-पुत्रवधू :
अनुज जैन-शिवानी जैन
पौत्र, पौत्री :
आशमन जैन,
अनुशी जैन

भ्रातागण :
स्व. श्री अनूपचन्द जैन (आगरा)
स्व. श्री निर्मलचन्द जैन (सीकर)
श्री प्रमोद कुमार जैन (भरतपुर)
श्री विनोद कुमार जैन
बहन-बहनोई :
स्व. शान्ति जैन-ओम प्रकाश जैन

पुत्री-दामाद :
शिवानी जैन-विवेक जैन
श्वेता जैन-नीरज जैन
दोहते :
अंतस, अंश,
अरहन, आरनव

निवास :- बी-80, ट्रान्स यमुना कॉलोनी, रामबाग, आगरा
एम-401, एस.पी.एस. हाइट्स, इन्दिरापुरम, गाजियाबाद
मो.: 9971663206, 9650490510

(CR D-3084)

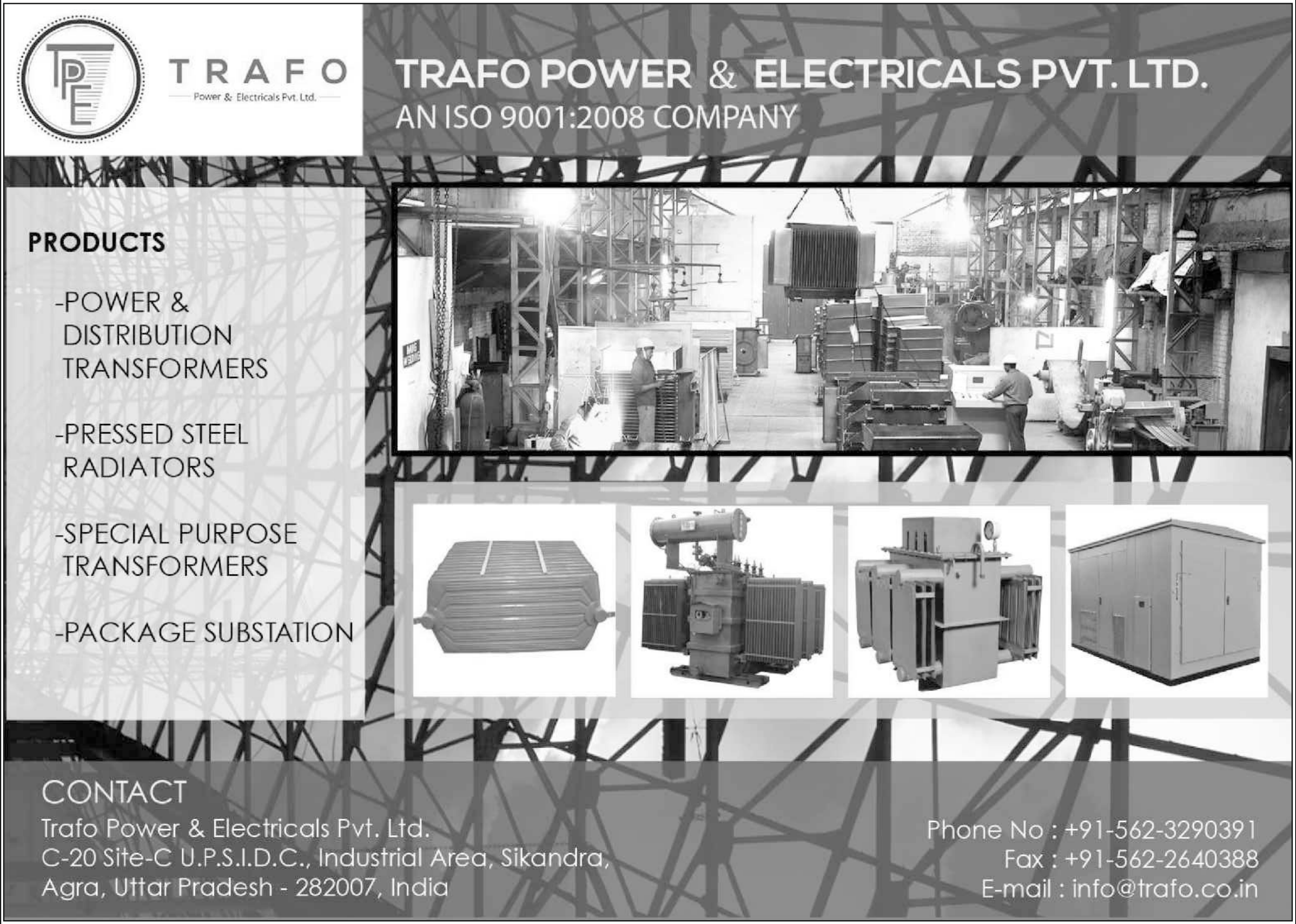
TRAFO
Power & Electricals Pvt. Ltd.
TRAFO POWER & ELECTRICALS PVT. LTD.
AN ISO 9001:2008 COMPANY
PRODUCTS
-POWER & DISTRIBUTION TRANSFORMERS
-PRESSED STEEL RADIATORS
-SPECIAL PURPOSE TRANSFORMERS
-PACKAGE SUBSTATION
CONTACT
Trafo Power & Electricals Pvt. Ltd.
C-20 Site-C U.P.S.I.D.C., Industrial Area, Sikandra,
Agra, Uttar Pradesh - 282007, India
Phone No : +91-562-3290391
Fax : +91-562-2640388
E-mail : info@trafo.co.in

पूज्य पिताजी स्व. श्री कपूरचन्दजी जैन व माताजी स्व. श्रीमती अंगूरी देवी जैन की
पुण्य स्मृति में

विमल चन्द जैन (रेता वाले)

ग्रुप ऑफ कम्पनीज

DEALERS & SUPPLIERS OF SILICA SAND & OTHER GLASS RAW MATERIAL

AKHIL JAIN (M) 9690441107 • ANKIT JAIN (M) 9837478564

★ The Rajasthan Silica Sand Suppliers
★ Shree Vimal Silica Traders
★ S.B. Jain Mineral Enterprises

Late Sh. Bimal Chand Jain
(Reta Wala)

ANKIT JAIN

AKHIL JAIN

128-129, गणेश नगर,
सेक्टर प्रथम,
पानी की टंकी के सामने,
फिरोजाबाद (उ.प्र.)
सम्पर्क :
Ankit Jain - 09837478564
Akhil Jain - 09690441107

RNI NO. RAJHIN/2012/47438

Postal Registration No. JAIPUR CITY/410/2022-24

RERA Registration No.
RAJ/P/2022/2193
www.rera.rajasthan.gov.in

www.pearlgroupindia.com

Pearl
Build Trust & Loyalty

Pearl
ROYAL
2/3 BHK Exclusive Apartments

An exclusive place
that you can call home

D-231 B, Tulsi Marg, Bani Park, Jaipur (RAJ)

GYMNASIUM | MULTIPURPOSE HALL | INDOOR GAMES

Builder & Developers
Pearl India Buildhome (P) Ltd.
PEARL DEEWAN S-14, Mangal Marg,
5th floor Bapu nagar, Jaipur-302015
Ph.: +91 141 4014044
Website : www.pearlgroupindia.com
E-mail : pearlgroup.vijay@gmail.com

Member
TODAR | CREDAI RAJASTHAN | RAJREDCO

Dr. Raj Kumar Jain : 9414054745
Ar. Vijay Kumar Jain : 9829010092

3 Decades of Excellence | 3600 Villas + Plots | More than 800 Apartments | 35 'Pearl' Tower | 6 Townships

Disclaimer:- The image shown in indicative only and the actual view may differ from the one shown here.

If Undelievered, please return to :
श्री चन्द्रशेखर जैन *(संयोजक)*
86, श्री विहार कॉलोनी, होटल क्लार्क आमेर के पीछे,
जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर-302018 (राज.)

पत्रिका स्वामी- अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा (रजि.) के लिए मुद्रक/प्रकाशक श्री चन्द्रशेखर जैन, 86, मगन विला, श्री विहार कॉलोनी, होटल क्लार्क आमेर के पीछे, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर-302018 ने गणेश आर्ट प्रिंटर्स, जे-51, कृष्णा मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर से मुद्रित, सम्पादक : श्री प्रकाश चन्द जैन।